RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 5 अंक 8 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

# जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका जनवरी- फरवरी 2023

HAPPY REPUBLIC DAY INDIA

जयवर्द्धन NEWS राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए YouTube Channel Jaivardhan News

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

## गणतंत्र की सार्थकता

MGA

*Happy Republic Day*

**MARBLE GANGSAW ASSOCIATION**

**RAJSAMAND**

Ravi Sharma
President
Mob.9414174601

Sanjay Samsukha
Gen. Secretary
Mob.9414174247

Rajnish Vagracha
Treasurer
Mob. 9414174267

Vice Presidents

Goverdhan Laddha, Pasoond Road
Pushkar Shrimali, Nathdwara Road, Lalit Bohra, Amet Road

Regd. Off.-SLP-1, Road No. 2, RIICO Ind. Area
Dhoinda Distt. Rajsamand (Raj.) 313326, Mob. 9549654601-4
Emial - mgarajsamand@gmail.com, Website. www.mgarajsamand.com

HAPPY
REPUBLIC DAY
INDIA

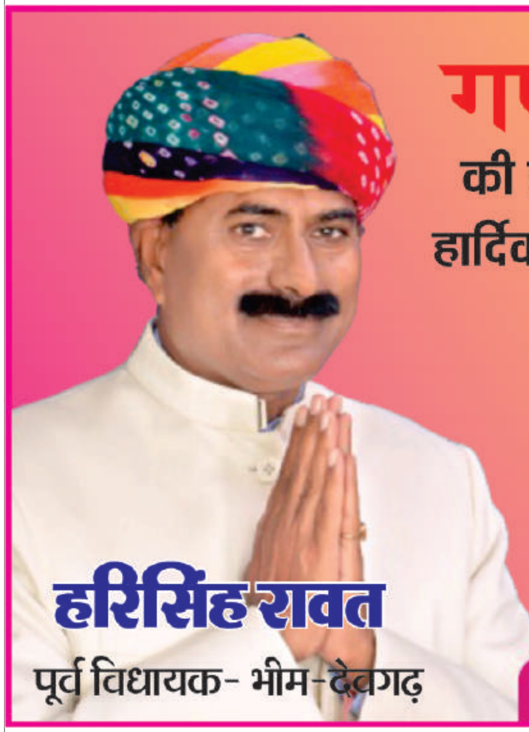

**गणतंत्र दिवस**

की समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

BJP

**हरिसिंह रावत**
पूर्व विधायक- भीम-देवगढ़

**बीरमसिंह रावत**
प्रधान
पंचायत समिति, भीम

HAPPY
REPUBLIC DAY
INDIA

गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर

की हार्दिक शुभकामनाएं

**जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड**

जे.के. ग्राम कांकरोली (राज.)

JK

JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

# जयवर्द्धन

**सम्पादक एवं प्रकाशक**
ललिता राठौड़

**निदेशक व उप सम्पादक**
लक्ष्मणसिंह राठौड़

**वितरण प्रभारी**
सुधीर दवे

**कार्यालय पता**
शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित
**नोट :** पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

## सम्पादकीय

# मिलकर मनाएं गणतंत्र दिवस

देश स्वतंत्र होने के बाद 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने संविधान अपनाया था। वहीं इसी तारीख को सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया। इस दिन को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया। 26 जनवरी 1950 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के बाद भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराकर भारतीय गणतंत्र के ऐतिहासिक जन्म की घोषणा की थी। अंग्रेजों के शासनकाल से छुटकारा पाने के बाद हमारा देश स्वतंत्र राज्य बना। तब से आज तक हर साल समूचे राष्ट्र में गणतंत्र दिवस गर्व और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू हुआ। तब से हर साल इस दिन गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। हर सरकारी दफ्तर व कुछ लोगों निजी स्तर पर भी उत्साह से यह दिन सेलीब्रेट करते हैं, जो गौरव की बात है। इसी दौरान भारतीय स्वतंत्रता से जुड़े सभी संघर्षों के बारे में बताया जाता है। स्कूल, कॉलेज से लेकर तहसील, उपखंड, जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अलग अलग कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय एकता, अखंडता, वीरों व महापुरुषों को याद किया जाता है। उनके प्रेरक प्रसंग आमजन को बताए जाते हैं, ताकि लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो सकें। इस खास मौके पर हर साल इंडिया गेट से लेकर राष्ट्रपति भवन, राजपथ पर भव्य परेड भी होती है। इस परेड में भारतीय सेना, वायुसेना, नौसेना की विभिन्न रेजीमेंट हिस्सा लेती हैं।

अब सवाल उठता है कि गणतंत्र दिवस मनाने की सार्थकता और आमजन की सहभागिता कितनी है, इस पर आम लोगों को सोचना व समझना होगा। क्या देश के लिए अपना बलिदान दे चुके शहीदों, वीरों व महापुरुषों की वो बातें, उनके प्रेरक प्रसंग से कोई सीख ले पा रहे हैं। यही यक्ष सवाल हर किसी के जेहन में है। आज गण और तंत्र के ताने बाने की क्या स्थिति है और मौजूदा परिस्थिति में गण और तंत्र की भूमिका को भी देखना होगा। देश की प्रगति के साथ अमीरी- गरीबी, ऊंच-नीच, आरक्षण आदि लागू करने के पीछे की मंशा और वर्तमान में उसकी स्थिति पर चिंतन करने की जरूरत है, तभी आज के आधार पर बदलाव होंगे और संविधान की सही मायने में सार्थकता रहेगी।

**लक्ष्मणसिंह राठौड़**
**वरिष्ठ रिपोर्टर, राजसमंद**
**मो. 9672980901**


## इस अंक में खास


1. **कवर स्टोरी 1 :** गणतंत्र की सार्थकता — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** राजसमंद शहर का सपना — पेज - 6
3. **व्यंग्य :** पोस्टमार्टम 2022 — पेज- 8
4. **मन भायो राजसमंद : श्री नाथद्वारा** — पेज- 10
5. **व्यंग्य :** काश ! मैं मोबाइल होती — पेज - 12
6. **व्यंग्य :** इंसान तो खुद भिखारी, याचना करें तो सिर्फ ईश्वर से — पेज - 14
7. **कवर स्टोरी :** गण हो या तंत्र, दोनों ही जवाबदेही रहें — पेज - 16
8. **मेरा गांव मेरे लोग :** बलदेवप्रसाद जी सांचीहर — पेज - 18
9. **लघु कथा :** लॉटरी खुलगी — पेज - 22
10. **कविताएं :** शिकवा किस्मत का न करना, नया साल, हेप्पी न्यू ईयर — पेज - 23
11. **व्यंग्य :** किताब की दर्दनाक दास्तां — पेज - 24
12. **कहानी :** राबिया और इस्लाम — पेज- 27
13. **पुस्तक समीक्षा :** डॉ. गोपाल राजगोपाल @ ...कोरोना कथा — पेज - 28
14. **लघुकथा :** आखातीज — पेज - 30
15. **चिंतन :** औपचारिक शिक्षा के साथ बहुत कुछ सीखने को — पेज - 32
16. **मेवाड़ी चौपाल :** एड्स बेमारी है भारी, वंचवा री करलो त्यारी — पेज - 34

# आजाद भारत देश में गणतंत्र की सार्थकता

हमारे देश में प्रति वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार द्वारा अधिनियम 1935 के तहत 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू हुआ और तभी से यह दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। दुनिया में भारत सबसे मजबूत गणतांत्रिक देशों में एक है।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि गण के तंत्र यानी कि लोकतांत्रिक व्यवस्था का उदय कहां हुआ और प्राचीन भारत में सबसे पहला गणराज्य कहां है। गणतंत्र को लेकर केवल ऐतिहासिक तथ्य ही नहीं, बल्कि वैदिक काल, प्राचीन विद्यावानों, महाभारत और बुद्ध व जैन ग्रंथों में भी गणतंत्रों के परिणाम मिलते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारत में गणराज्यों की एक निश्चित अवधारणा थी, जो कि किसी भी तरह से यूनान और रोम के समकालिनों से कम नहीं थी।

प्राचीन भारत में गणराज्य निश्चित रूप से थे और उनके लिए गण या संघ शब्द का उल्लेख भी मिलता है। इसका तात्पर्य ऐसे समुदाय से है जो कि विधि द्वारा नियंत्रित हों। गण शब्द का अर्थ गिनती या गणना करने से है, तो गण का अर्थ एक से अधिक लोगों व आमजन से भी लिया जाता है। इस तरह से गणराज्य का अर्थ ऐसे राज्य से है जो कि एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा शासित हो।

धर्म, ग्रंथ और धार्मिक विद्यावानों के अनुसार गणराज्य संस्कृत भाषा के सबसे बड़े विद्वान और श्रेष्ठ व्याकरणाचार्य महर्षि पाणिनी संघ की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि संघ केवल राजनीति प्रकार ही नहीं, बल्कि एक ऐसा शब्द है जो कि कई उद्देश्यों के लिए होता है। पाणिनी के अनुसार संघों में वह धार्मिक संघों का उदाहरण है, जो बंधुत्व के सिद्धांत पर कार्य करते हैं। पाणिनी अपनी अष्टाध्यायी में संघों का उल्लेख करते हैं और उन्हें आयुधजीवी कहते हैं। बौद्ध ग्रंथ महावग्ग के अनुसारए गण को एक से अधिक लोगों के शासन के रूप में परिभाषित किया गया है।

बौद्ध भिक्षु के मतानुसार मत को जानने के लिए गणों द्वारा उपयोग की जाने वी शलाका पद्धति के प्रयोग का समर्थन करता है।

महाभारत के शांतिपर्व के 107वें अध्याय में गण शब्द का प्रयोग राजनीतिक रूप में किया गया है। इसमें युधिष्ठिर और भीष्म के मध्य संवाद में गणों की विशेषता को बताते हुए कहा गया है कि गण का अर्थ न सिर्फ शासन, संस्थाओं बल्कि संपूर्ण राजनीतिक राज्य, समूह और संसद से है। ऋग्वेद में कई स्थानों पर गण शब्द का उल्लेख मिलता। इसमें देवताओं के गणों का उल्लेख है। इंद्र, मरुत, बृहस्पति को गणपति कहा गया है।

प्राचीन भारत का सबसे पहला गणराज्य बिहार प्रांत के वैशाली में था। इसे वैशाली गणराज्य के नाम से भी जाना जाता था। वैशाली नगर वज्जि महाजनपद की राजधानी थी। यह क्षेत्र अपने गणतांत्रिक मूल्यों और प्रभावों के कारण जाना जाता था। वैशाली में गणतंत्र या गणराज्य की स्थापना लिच्छवियों द्वारा की गई थी। इनका संबंध एक हिमालय ट्राइव लिच्छ से था।

वैशाली में गणराज्य को स्थापित करने का यह उद्देश्य था कि बाहरी आक्रमणकारियों से बचा जा सके और यदि बाहरी आक्रमण हो तो गणराज्य को जनता का पूर्ण समर्थन मिले। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार वैशाली में ही दुनिया का पहला गणतंत्र यानी गणराज्य स्थापित हुआ। उस समय यहां छोटी- छोटी समितियां होती थीं, जो कि गणराज्य के अंतर्गत आने वाली जनता के लिए नीति नियम बनाते थे।

वैशाली के तब और अब की रूपरेखा पर बात करें तो लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैशाली में शासक जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चुने जाते थे और इस तरह से यहां गणतंत्र की स्थापना हुई। प्राचीन वैशाली अति समृद्ध और सुरक्षित नगर था। यह एक दूसरे से कुछ अंतर पर बनी तीन दीवारों से घिरा था। इसका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में भी मिलता है।

चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार पूरे नगर का घेरा 14 मील के लगभग था। वैशाली बिहार के वैशाली जिला में स्थित एक गांव है। यह भगवान महावीर का जन्म स्थान भी है। इसलिए जैन धर्म को मानने वालों के लिए वैशाली एक पवित्र स्थल है। भगवान बुद्ध तीन बार वैशाली आए थे और ये उनकी कार्यभूमि थी। वैशाली पौराणिक हिन्दू तीर्थ और पाटलीपुत्र जैसे ऐतिहासिक स्थलों के निकट है। मौजूदा समय में वैशाली पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय और धार्मिक स्थल है। वैशाली में न सिर्फ भारत बल्कि दूसरे देशों के भी कई मंदिर बने हैं।

अब मौजूदा स्थिति और परिस्थिति के अनुसार ऐसा लगता है कि संविधान में कुछ संशोधन होने चाहिए है, जिसको लेकर कई बार राजनेताओं, सामाजिक संगठनों और राजनीतिक दलों ने भी खंड खंड अपने विचार रखें, मगर संयुक्त रूप से इसमें बदलाव को लेकर आज तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया, जिसके लिए ठोस प्रयास करने की खास जरूरत है।

## गणतंत्र दिवस का इतिहास

इस यात्रा को सन 1930 में एक सपने के रूप में संकल्पित किया गया और हमारे भारत के शूरवीर क्रांतिकारियों ने सन 1950 में इसे एक गणतंत्र के रूप में साकार किया। तभी से धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत का निर्माण हुआ और एक ऐतिहासिक घटना साकार हुई। 31 दिसंबर 1929 की मध्य रात्रि में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर सत्र के दौरान राष्ट्र को स्वतंत्र बनाने की पहल की गई थी। इस सत्र की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की थी। बैठक में उपस्थित सभी क्रांतिकारियों ने अंग्रेज सरकार के शासन से भारत को आजाद करने और पूर्ण स्वतंत्रता को साकार करने के लिए 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में एक ऐतिहासिक पहल बनाने की शपथ ली थी। भारत के उन शूरवीरों ने अपनी लक्ष्य पर उतरने की भरसक कोशिश की और भारत सचमुच स्वतंत्र देश बन गया। उसके बाद भारतीय संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को हुई, जिसमें भारतीय नेताओं और अंग्रेजों ने कैबिनेट मिशन में भाग लिया। भारत को एक संविधान देने के विषय में कई चर्चाएं, सिफारिशें और वाद- विवाद हुआ। कई बार संशोधन करने के बाद भारत के संविधान को अंतिम रूप दिया गया, जो 3 तीन साल बाद 26 नवंबर 1949 को आधिकारिक रूप से अपनाया गया। इस अवसर पर डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। हालांकि भारत 15 अगस्त 1947 को एक स्वतंत्र राष्ट्र बन चुका था, लेकिन इस स्वतंत्रता की सच्ची भावना को प्रकट किया 26 जनवरी 1950 को। इर्विन स्टेडियम जाकर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और इस तरह गणतंत्र के रूप में भारतीय संविधान प्रभावी हुआ।

# राजसमन्द
# शहर का सपना

मेरे जैसे साधारण शहरी से कोई मेरे शहर का मिज़ाज पूछे, आने वाले शहर की बदलती तस्वीर पर को प्रतिक्रिया पूछे तो मेरी नज़रों के सामने कांकरोली और राजनगर दोनों उपनगर एक सामाजिक संक्रमण बनाती महत्वाकांक्षी बस्तियों के रूप में सामने आ खड़े होते हैं। यह शहरी फ्यूजन कैसा होगा, पता नहीं, लेकिन दोनों उप नगरों की मूल प्रकृति के अस्तित्व का प्रश्न जरूर मेरे अंदर के सोच के कपाटों को ठकठकाने लगते हैं।

बावजूद अनेक छोटी मोटी सड़कों से एक बड़ी लंबी सड़क के किनारों की कोर का स्पर्श करने के अभी भी राजसमंद एक सड़क के सही या गलत मिथ से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाया है। यह अनेक बस स्टेंड या बस स्टॉप का शहर भी है, लेकिन कोई एक सर्व स्वीकार्य बस स्टेंड का अक्स अभी भी कन्फ्यूज कर रहा है।

अलबत्ता बचपन और युवावस्था के एक अलसाये, सिमटे और सकुचाए बाजार का मिजाज़ भी अब बदल रहा है। माल, कोर्नर्स, स्वीट सेंटर्स, फेशन स्टोर्स, बैंक और पार्लर्स को देखकर प्रसन्नता तो होती है, लेकिन घबराहट भी होती है कि इस बदलाव के बावजूद सभी शहर के मुख्य बाजार को छोड़ना नहीं चाहते हैं। कांकरोली की चौपाटी से लेकर गुप्तेश्वर की गली के बाहर बाजार अब सड़क के बीचों बीच आ गया है। चलते रहिए। दुकान और सड़क के बीच की सीमा रेखा क्या है, यह न पूछें तो ही ठीक। पड़ौसी गलियां भी अपने निकट के बाजार के अनुकरण में आमने सामने आकर स्नेह मिलन को आतुर लगती हैं। हां, कोई शक नहीं पिछले कुछ ही वर्षों में सड़क, चौराहों सर्कल्स क्रांति जरूर आई है। भीलवाड़ा रोड पर मादड़ी चौराहे से शुरू होकर लंबी सुती एक सड़क पर पन्नाधाय सर्कल से लेकर गोमाता, मुखर्जी, जेके, चौपाटी, राटासेण, जलचक्की, हुसैनी, बड़ला और दीनदयाल उपाध्याय तक चौराहों की बहार है। तकनीक पर नहीं जाए, वरना चौराहा और तिराहा का फर्क नज़र आ जाएगा।

लेकिन बदलाव जारी है। मूलभूत जरूरतों के प्रसंग में शहर जब जैसा मांग रहा है, चाह रहा है, यहां का मध्यमवर्गीय व्यापारी, कामगार उस सपने को पूरा कर रहा है। शहर युवा सपनों को धरातल पर उतारने को कृत संकल्प तो लगता है।

शहर के आधारभूत ढांचे को तनिक एक नज़र से देखें। परिवहन की हृदय रेखा सी लगता है। यहां से गुजरने वाला फोरलेन, सिक्स लेन। इन्हीं के बल पर मार्बल और जेके दौड़ लगाने की लगातार कोशिश करता है। एक बड़ा आजीविकोपार्जन का स्रोत।

मार्बल को खाड़ी के देशों और पूर्व एशिया पर्यंत मुंद्रा, कांडला और कृष्णपट्टन के माध्यम से परिचित कराने में राजसमंद की भूमिका को कम करके नहीं को आंका जा सकता। जानकारों का कहना है, राजसमंद के National Highway Development project (NHDP) को Dedicated Freight Corridors (DFRC) से जोड़ने की जरूरत है।

शिक्षा के क्षेत्र में दिखाने के लिए ढेरो स्कूलों और कॉलेजों की संख्या से हम इतरा भले ही लें, ये सब छद्म बेरोजगारी के स्रोत हैं। विश्वविद्यालय हमारी जरूरत है, लेकिन इसके प्रारूप पर हम अस्पष्ट हैं। विशेषीकृत (कौशल विकास संबद्ध) विश्वविद्यालय से स्थानीय युवाओं को संबल मिल सकता है। बहुआयामी विश्वविद्यालय क्या कर लेंगे। फ़कत डिग्रियों के मोहजाल में युवाओं को भ्रमित करने के। इस ढांचे को खड़ा करने को पाठ्यक्रम, शुल्क, मानवीय व भौतिक संसाधनों, भूमि भवन, वित्तीय स्रोत व संबद्धता जैसे विषयों पर संक्षिप्त, लेकिन परिणाम धर्मी संवाद की आवश्यकता है। विशेषीकृत विश्वविद्यालय के लिए हमारे समक्ष माइनिंग व जियोलोजिकल इंजीनियरिंग, देव संस्कृति, कृषि विश्वविद्यालय पंत नगर, इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स, झारखंड, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट, ग्वालियर आदि मॉडल्स हैं। सवाल इन्हें वरीयता का विषय बनाने का।

राजसमन्द के उद्योगों की बड़ी चर्चा है। इसे राजसमन्द की लाइफलाइन भी कहा जाता है, लेकिन प्रकृति का दोहन कर कीमत चुका इनका विकास कैसे होगा, विचारणीय है। सामाजिक जवाबदेही यहां मुख्य बात है।

हां, जल ग्रहण विकास और इको विलेज विकसित करने हमें बहिर्मुखी होने की जरूरत नहीं है। पिपलांत्री जैसे क्षेत्र यहां और भी विकसित किए जा सकते हैं। राजसमंद सपनों का शहर है और क्षेत्र भी। इसके सतत् विकास के लिए कोरी राजनीति नहीं, गंभीर विमर्श, त्वरित निर्णय और फोलोअप व फीडबेक की प्रक्रिया बनी रहनी चाहिए। अन्यथा राजसमन्द झील और ब्रोडगेज पर आए दिन का अरण्य रोदन हमारे सामने है।

प्रस्तोता :

**डॉ. राकेश तैलंग**
वरिष्ठ शिक्षविद्
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 94602-52308

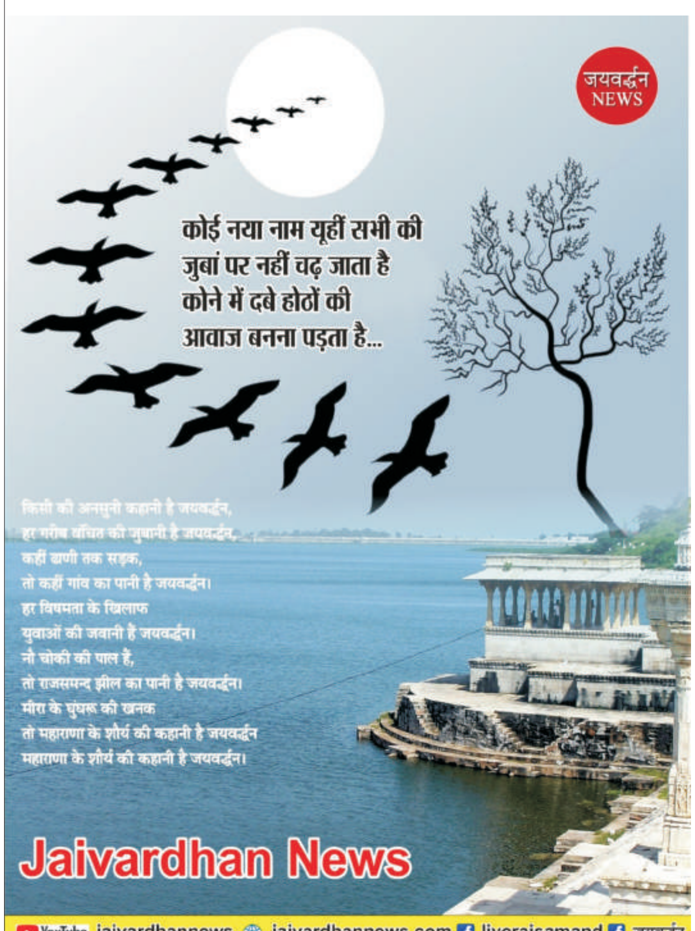

# पोस्टमार्टम 2022

## लेखा-जोखा वर्ष 2022

ब्रह्माण्ड का इकलौता गड़े मुर्दे उखाड़ने वाला चैनल विक्की मीडिया में आपका स्वागत है। हमारे संवाददाता नारद बेखबर, कैमरामैन धृतराष्ट्र और व्यंग्य की समझ से पैदल व्यंग्याचार्य श्री सवा एक सौ आठ विनोद विक्की के साथ आइए कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का पोस्टमार्टम अथवा व्यंग्यात्मक विश्लेषण करते हैं, जो वर्ष 2022 के ऐतिहासिक कैलेंडर में दर्ज और दफन हो चुकी है।

इस वर्ष एक ओर जहां सदी के महानायक ने कमला पसंद के माध्यम से युवाओं को उत्तम स्वास्थ्य हेतु पौष्टिक गुटखा के सेवन का आह्वान किया, तो दूसरी ओर सभी हिंदी फिल्मों की शुरुआत में हाथों में पैड लेकर नंदू के पास पहुंच धूम्रपान ना करने की नसीहत देने वाले देशभक्त अभिनेता खिलाड़ी कुमार जुबां केसरी के प्रणेता सिंघम और बादशाह के साथ गुटखा बेचते नजर आए।

बॉलीवुड के बाजीराव मस्तानी की जोड़ी भी इस साल खासी चर्चा मे रही। पति परमेश्वर के नग्न फोटो सूट से अभिप्रेरित धर्मपत्नी जी जब पठान के साथ अर्धनग्न अवस्था में नजर आई तो नयनसुख दर्शकों में गजब का उत्साह देखने को मिला। उन्हें इस बात की उम्मीद है कि कम हो रहे जीडीपीए रोजगार और आय की तरह संभवत: वर्ष 2023 में ऊर्फी और पादुकोण के कपड़ों की मात्रा में और अधिक कमी नजर आए। दर्शकों द्वारा टालीवुड को दुलार और बालीवुड को दुत्कार का ट्रेंड परवान चढ़ता देख सलमान, ऐश्वर्या राय जैसे हिंदी सितारे साउथ की फिल्मो में गॉडफादर तलाशते दिखे तो दक्षिण के एक्टर हिंदी फिल्मों पर राज करते नजर आए।

बिंगो टेढ़े- मेढे की तरह देश की राजनीति भी इस साल टेढ़ी- मेढी रही। देश की सबसे प्राचीन राजनीतिक संस्थान में महापरिवर्तन देखने को मिला। हो रही किरकिरी और असफलता से थक हार कर परंपरागत पारिवारिक अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी किसी गैर पारिवारिक सदस्य को दे दिया। साथ ही इस पार्टी के तथाकथित युवा नेता लंबी दाढ़ी और राजनीतिक फेविकोल लेकर भारत को जोड़ने निकल पड़े। कम सीट के बावजूद जोड़- जुगाड़ से सरकार बनाने वाली बहुचर्चित राष्ट्रीय पार्टी को बुद्ध और चाणक्य की भूमि पर अपने ही सहयोगी का तीर चुभ गया। गठबंधन की गांठ खोल कर चाचा भतीजा के साथ हो लिए। सांसारिक मोहमाया त्याग चुके संत दूसरी बार यूपी चुनाव में सत्ता सुख के लिए निर्वाचित हुए। पंजाब में सर्वाधिक हंसाने वाले को सीएम की कुर्सी तो फेफड़ा बाहर निकाल हंसने वाले ठोको मंत्र के प्रतिपादक को कारावास का योग बना।

भारतीय मूल के ऋषि सुनक का ब्रिटेन पीएम बनने पर भारत के वैसे लोगों में भी आस और उम्मीद की किरण जगी, जिनकी अपने पड़ोसियों से कभी नहीं बनी। सप्ताह में कम से कम दो दिन अपने पड़ोसियों से जुबानी जंग अथवा लाठी भांजने वाला व्यक्ति भी सुनक से उम्मीदें पाल चुका है।

आपने दोस्तों की संगति में लोगों को बिगड़ते देखा और सुना होगा। कुछ इसी तरह के हालात इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिले, जब आपसी सुलह की बजाय मित्र राष्ट्रों के बहकावा में मैं झुकेगा नहीं...। पुष्पा टाईप यूक्रेन ने रुस से पंगा ले लिया और जन धन क्षति का तांडव शुरू हो गया।

राष्ट्रीय स्तर पर अदम्य साहस और वीरता का परिचय देते हुए युवाओं ने भारत सरकार की अग्निपथ योजना के विरोध में यूपी- बिहार के अग्निवीरों ने लुकाठी लेकर राष्ट्रीय संपत्ति को फूंकने में अपनी भरपूर ऊर्जा का इस्तेमाल किया।

चलते चलते यदि सहिष्णुता और धार्मिक उपलब्धियों की बात ना हो तो साल का कैलेंडर अधूरा ही माना जाएगा। इस वर्ष के अंतिम माह में देश की शीर्षस्थ शैक्षणिक संस्था के अमन पसंद शिक्षित शांतिदूतों द्वारा बनियों और ब्राह्मणों को देश से बाहर निकालकर सौहार्दयुक्त विकसित भारत की परिकल्पना का प्रतिपादन दीवारों पर उत्कीर्ण की गई। ज्ञानवापी की लहक मथुरा में देखने को मिली।

दक्षिण भारत में बुर्का बैन का स्यापा हो अथवा दिल्ली से झारखंड का लव जिहाद आदि मामलो ने संक्रमित हो चुकी मानवीय इम्युनिटी के लिए धार्मिक बूस्टर डोज का काम किया। अम्बुजा सीमेंट सी सहनशक्ति के कारण बेरोज़गारी, प्राइवेटाइजेशन के दौरान इस वर्ष भी भारतीय नागरिक काफी संयमित दिखे। महंगाई, बेरोज़गारी आदि की चिंता छोड़ मीम्सथ्रील्स/ वेबसीरीज देखने और बनाने में व्यस्त रहे। इन सारी वार्षिक गतिविधियों को ...देख रहा है बिनोद... की तर्ज पर सारा देश बखूबी देखता रहा।

बहरहाल आशा और उम्मीद पर दुनिया टिकी है, आगामी वर्ष की मंगलमय कामनाओं के साथ हम अपनी टीम के साथ ऐसे ही धांसू खबरों के साथ जल्द ही हाजिर होंगे। आपके चहेते चैनल विक्की मीडिया पर तब तक के लिए हैप्पी न्यू ईयर।

**विनोद कुमार विक्की**
**महेशखूंट बाजार, जिला खगड़िया**
**बिहार, 851213**
**मो. 7765954969**

**हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।**

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
उत्तरप्रदेश - एस.एन. कुंवर - 77259-99777
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

**बनो सच की ताकत**
**जयवर्द्धन पत्रिका**
**आपकी खबर**
**अब आपकी जुबानी..**
**अब आप**
**भी भेज सकते हैं**
**खबर**

# श्री नाथद्वारा में श्रीजी संग नटराज के दर्शन

**गतांक से आगे....**

फाल्गुन कृष्ण 7, वि.सं. 1728 से आज तक श्रीनाथजी का मंदिर जन जन की श्रद्धा का केन्द्र ही नहीं बना, बल्कि पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण के घर की समृद्ध सम्पन्न परंपरा व भारतीय गृहस्थ की जीवनशैली का एक आकर्षक चित्र भी प्रस्तुत करता है।

श्री नाथजी के नाथद्वारा पधारने पर प्रवासित ब्रजभूमि और वहां स्थित नंदालय के निर्माण व समस्त व्यवस्थाएं करने का गुरुतर दायित्व देलवाड़ा सरदार गोपालदास उस्ता को सौंपा गया था। यह एक विशेष प्रकार का स्थापत्य शिल्प आगे चलकर समस्त पुष्टिमार्गीय मंदिरों, जिन्हें घर कहा गया, की पहचान बन गया।

श्रीजी के दर्शन लाभ करते हुए तनिक इस नंदघर के स्थापत्य पर भी एक दृष्टिपात कर लिया जाए। मन्दिर का सर्वाधिक मुख्य भाग निज मन्दिर, शैया मन्दिर, मणिकोठा और छठी घर कहलाता है। इन चारों के ऊपर छप्पर की छत है, जो इस मन्दिर को किसी घर का स्वरूप देता है। इसी पर ध्वजाजी एवं सुदर्शन चक्र विराजित है, जो प्रभु दर्शन के साथ भक्तों के लिए निरखकर परम संतोष का अनुभव करने का विषय हैं।

श्रीनाथ जी के समक्ष डोल तिवारी और उसकी खिड़की ध्रुव वारी है, जो रतन चौक, कमल चौक, धोली पटिया और गोवर्द्धन चौक तक जाती है। इन सभी चौकों को विभाजित करने वाले हथिया पोल, सिंह पोल, प्रीतम पोल व सूरज पोल कहलाते हैं। कीर्तनिया गली के बाहर और प्रसादी भंडार के आगे अनार चौक में कुबेर की गादी या समाधानी की बैठक है।

गृहस्थ जीवन के साज अनिवार्यत: जिन घरों में सजाए जाते हैं, ऐसे वस्त्र घर, गहना घर, फूल घर, पान घर, शाक घर, दूध घर, पातल घर और रसोई घर भक्त वैष्णवों और पर्यटकों के लिए श्रद्धास्पद दर्शन का का केन्द्र हो सकते हैं। इसी रसोई घर में राजभोग और शयन भोग की सखड़ी, गोपीवल्लभ व बालभोग सामग्री सिद्ध की जाती है।

माला गली, पंखा गली, कीर्तनिया गली, शाकघर गली और आड़ी गली मन्दिर की आवश्यक सेवाओं को सर्जने वाले स्थल

हैं, जिनके साथ श्रीजी सेवा के महत्वपूर्ण स्थल श्रीकृष्ण भंडार, खर्च भंडार, खासा भंडार व प्रसादी भंडार दृष्टव्य हैं। खर्च भंडार उस ऐतिहासिक घटना का मूक प्रमाण है, जब ठाकुरजी ब्रज मंडल से आकर प्रथम यहां स्थित पीपल वृक्ष के नीचे बिराजे थे।

श्रीनाथ जी के घर को आभिजात्य भव्यता देने वाले नक्कारखाना, लाल दरवाजा, सुदर्शन चक्रराज, सप्तध्वजा पुष्टिमार्ग की प्रधान पीठ परंपरा का प्रतिनिधित्व करने वाले उपादान हैं। कहा जाता है कि श्री सुदर्शन रामानुज संप्रदाय के किसी वैष्णव के पास थे। महाप्रभु वल्लभाचार्यजी ने इन्हें एक दक्षिणी ब्राह्मण द्वारा प्राप्त कर वल्लभ कुल में प्रतिष्ठा प्रदान की थी।

जैसा कि पूर्व कहा गया है, श्री नाथद्वारा आए और इतिहास व संस्कृति बोध को संजीवित करने वाले स्थलों के दर्शन न करें, तो पर्यटन अधूरा रह जाएगा। इस दृष्टि से सिंहाड़ के हनुमान जिन्हें ब्रज से मेवाड़ यात्रा के दौरान महाप्रभुजी ने अपने जन्म दिवस पर स्मरण किया था, रास्ते में सभी वैष्णव ब्रजवासियों की सुरक्षा का भार वहन करने वाले काल भैरव, प्रभु के रथ पर चालक के रूप में आरूढ़ होकर ब्रज से नाथद्वारा पधार कर बनास के घाट पर बिराजने वाले महादेवजी जिनके बारे में कहा जाता है कि वे श्रीनाथजी की अग्रिम गोल देहली पर बैठ ठाकुरजी के नित्य दर्शन करते हैं, महत्वपूर्ण देव हैं।

श्रीनाथद्वारा आगमन पर तनिक उन स्थलों पर भी एक दृष्टि अवश्य करें, जो प्राचीन काल से अद्यतन अपने प्राकृतिक सौरम्य से मन लुभावन बने हुए हैं।

लालबाग, कछवाई, वृंदावन बाग, गणेश टेकरी सहित अभी सद्य नाथद्वारा नगर को एक विशिष्ट पहचान देने वाले नाथद्वारा से नेशनल हाइवे पर उदयपुर मार्ग पर उपली ओडन में मिराज इंडस्ट्री के पास विश्वास स्वरूपम् नाम से ख्यात विशाल शिव प्रतिमा इस शहर ही नहीं, समस्त भारतवर्ष के लिए पर्यटन क्षेत्र का एक नायाब दर्शनीय स्थल है।

प्रस्तोता :

**डॉ. राकेश तैलंग**
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 96729-80901

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

# काश! मैं मोबाइल होती

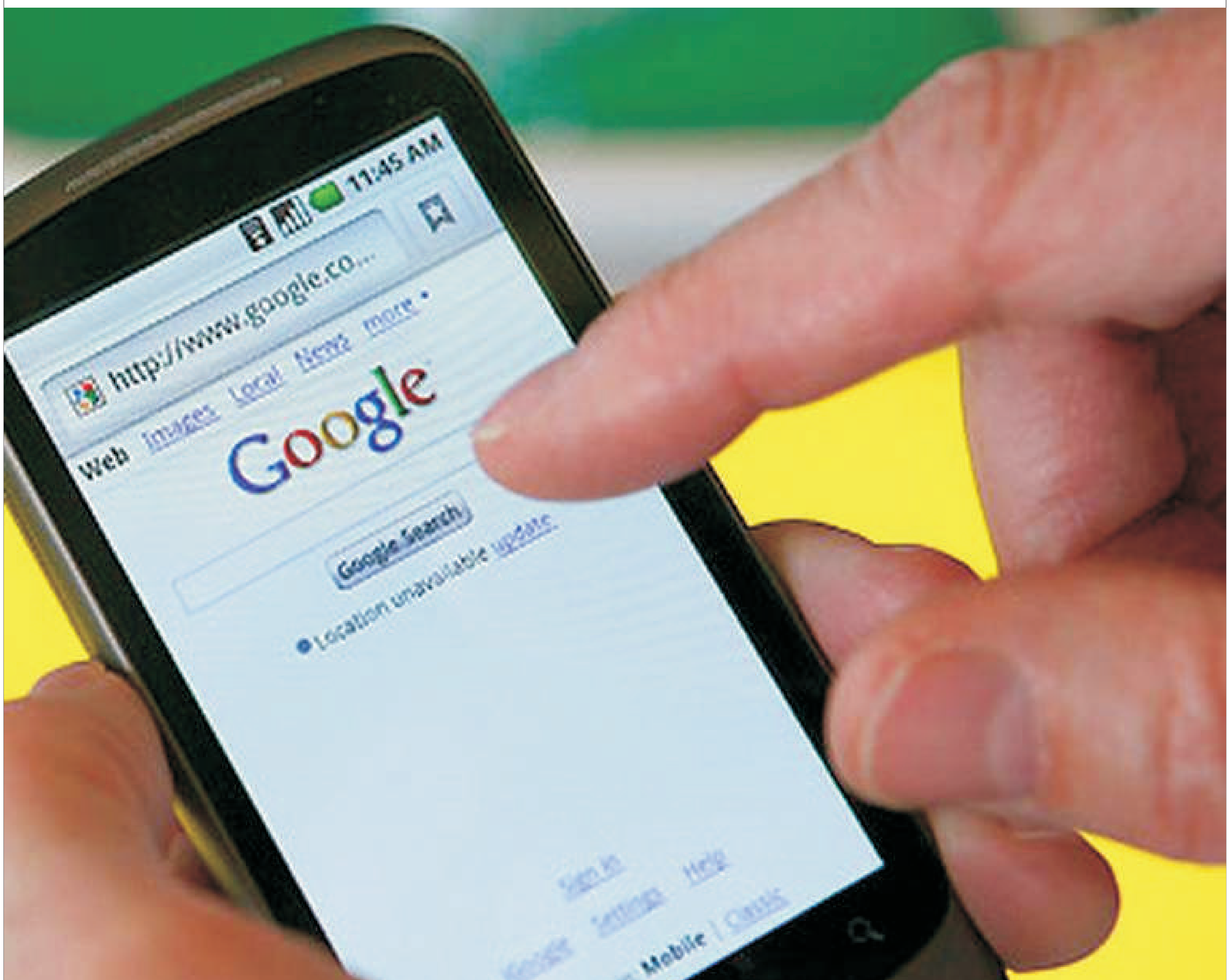


काम बहुत था यार आज, बुरी तरह से थक गया हूं। सोफे पर अपना बैग रखते हुए अजीत ने कहा।

अजीत जल्दी से फ्रेश हो जाओ, तब तक मैं चाय बना देती हूं। ठीक है, मधु! कहते हुए अजीत बाथरूम में चला गया।

अजीत के फ्रेश होकर हॉल में आते ही माधुरी चाय–पकौड़े लेकर उसके पास पहुंची। चाय पीते हुए माधुरी ने पूछा– अजीत ! आजकल आपका घर आना काफी लेट हो रहा है, काम का लोड कुछ ज्यादा है क्या?

पूछो मत मधु, कंपनी का दिया टारगेट पूरा करने का बहुत ज्यादा प्रेशर है। अजीत ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

अजीत! हमारे घूमने का प्लान कब से है? दो– तीन महीने बाद चलने को बोले थे, पर ऑफिस के कामों में तो आप भूल ही गए इसे। क्या यार, तुम्हें घूमने की पड़ी है। यहां काम का इतना प्रेशर है कि सुबह ऑफिस जाने के बाद लेट नाइट आना होता है। अजीत ने उखड़े मूड में जवाब दिया।

अजीत का गुस्सा देख माधुरी ने चुपचाप चाय खत्म किया और किचन में चली गई। इधर अजीत भी अपने स्मार्टफोन (मोबाइल) में बिजी हो गया। डिनर तैयार होने के बाद माधुरी ने

अजीत को कई बार आवाज दी, परंतु अजीत अब भी अपने स्मार्टफोन में लगा रहा। माधुरी को ये समझ में नहीं आ रहा था कि अजीत वास्तव में बिजी है या उसे अनसुना कर रहा है। खैर, कुछ समय बाद अजीत डाइनिंग टेबल पर आया और फिर दोनों ने डिनर किया।

थोड़ी देर बाद दूध की गिलास लेकर माधुरी बेडरूम में आई। वहां पहले से मौजूद अजीत को फिर से मोबाइल में बिजी देख माधुरी का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया, परन्तु उसने अपने आप को शांत रखते हुए दूध के गिलास को टेबल पर रखकर रूम को व्यवस्थित करने में लग गई और उधर अजीत अपने स्मार्टफोन में लगा रहा। थोड़ी देर बाद कमरे में छाई शांति को खत्म करते हुए माधुरी ने कहा– फोन में क्या कर रहे हो अजीत, जब से आए हो तब से फोन में लगे हो।

कुछ नहीं मधु, ऑफिस के कुछ ई–मेल चेक करके फ्री हुआ तो सोचा जरा सोशल मीडिया की प्रोफाइल चेक कर लूं। यार, सुबह से टाइम ही नहीं मिला, किसी यार– दोस्त के पोस्ट पर लाइक, कमेंट करने का।

हां, क्यों नहीं अजीत, आभासी दुनिया के यार दोस्तों की भी खैर– खबर जरूरी है, भले ही...! माधुरी ने तंज कसते हुए कहा।

भले ही क्या मधु....। माधुरी के अधूरे शब्दों पर अजीत ने टोका।

कुछ नहीं अजीत, आप अपना काम करो। आपके लिए सिर्फ ऑफिस का काम और आभासी दुनिया के मित्र यार ही है, हम तो कुछ भी नहीं।

माधुरी को बीच में टोकते हुए अजीत ने कहा– प्लीज, फालतू दिमाग मत ख़राब करों! पता नहीं तुम्हें कितनी बेरोजगारी है, ऊपर से ऑफिस में इतना कम्पटीशन और रही बात ऑफिस के कामों की तो मैं खुद के लिए जॉब नहीं करता, बल्कि परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए करता हूं।

सहमत हूं अजीत कि नौकरी में काम का प्रेशर बहुत रहता है। खासकर जब नौकरी प्राइवेट हो तो और भी ज्यादा। आप ये प्रेशर हमारी खुशियों के लिए लेते हैं, परन्तु मुझे इन खुशियों के साथ– साथ आपके दो पल भी चाहिए, जिसमें मैं अपने दिल की बात आपसे कह सकूं। माधुरी ने कहा।

पर मधु....।

पर....... कुछ नहीं, अजीत मैं आपसे आपके फुर्सत के दो पल चाहती हूं, जिसमें मैं आपसे अपने दिल की बात कह सकूं। लेकिन आपका अधिकतर समय अपने ऑफिस में और उससे बचा समय मोबाइल संग बीतता है। आपके साथ रहकर भी मैं खुद को अकेला महसूस करती हूं और मन ही मन यही सोचती हूं कि काश मैं आपकी बीबी ना होकर आपका मोबाइल होती, जिसे आसानी से आपके दो पल मिल जाते हैं। इतना कहते– कहते माधुरी के कंठ भर आए और उसने खुद को चादर में छुपा लिया और इन हालत में अजीत भी खुद को असहज महसूस करने लगा।

**अंकुर सिंह**
हरदासीपुर, जौनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन 222129
मो. 8367782654

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

व्यंग

# इंसान तो खुद भिखारी या पराश्रित, याचना करें तो केवल ईश्वर से

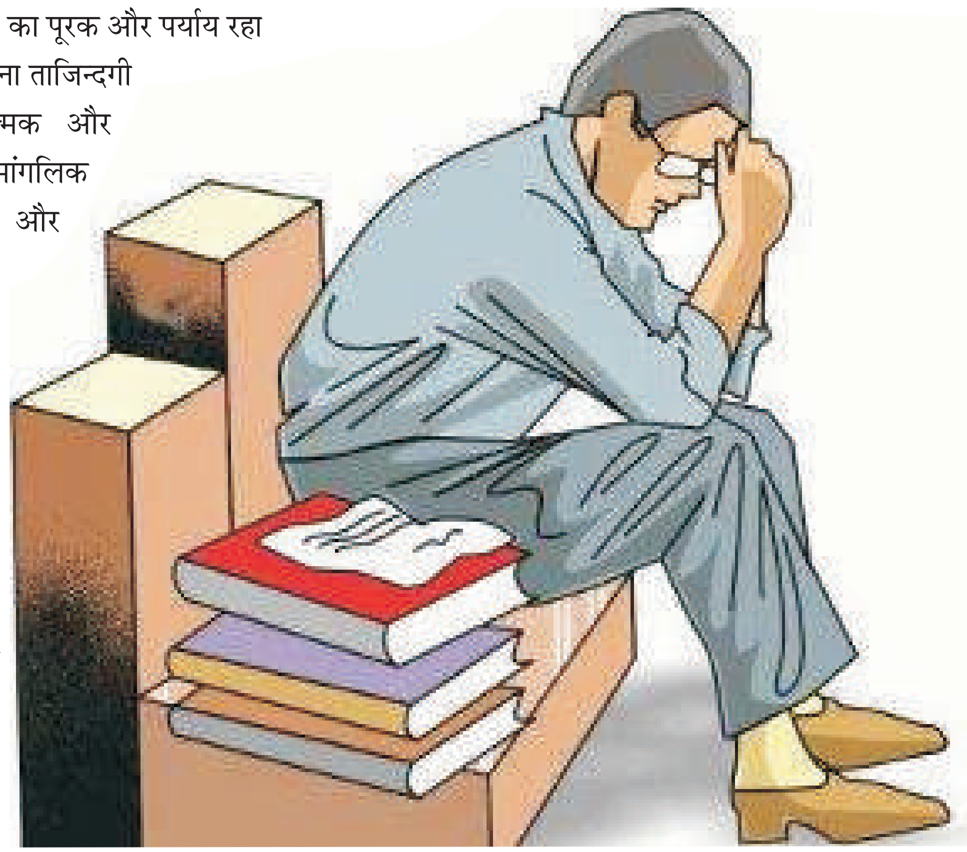

मनुष्य का पूरा जीवन ऐषणाओं का पूरक और पर्याय रहा है, जहां हर किसी को कुछ न कुछ कामना ताजिन्दगी बनी ही रहती है। इसके सकारात्मक और नकारात्मक, वैयक्तिक अथवा सर्वमांगलिक प्रकार हो सकते हैं, लेकिन इच्छाओं और तृष्णाओं का सागर हर पल लहराता ही रहता है।

कोई- कोई बिरला ही होगा जो संसार में आने के बाद इन इच्छाओं से परे रहकर जीवन जीना सीख जाए, अन्यथा घर बार छोड़कर संन्यासी बने संत महात्मा, मठाधीश- महंत और महामंडलेश्वरों तक को बड़े- बड़े लोगों के आगे नतमस्तक होते और सांसारिक भोग- विलास में रमे हुए देखा गया है। ऐसे में शाश्वत सुख, शान्ति और आत्मतोष की प्राप्ति के लिए लोग भटकते हुए नज़र आते हैं, पर कहीं उन्हें इसका तनिक भी आभास नहीं हो पा रहा है।

हम लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं, भविष्य की कल्पनाओं और कामों तथा ऐषणाओं की पूर्ति की बुनियाद स्थापित करने से लेकर मामूली कामों तक के लिए ऐसे- ऐसे लोगों को पूजते रहते हैं, आदर- सम्मान देते रहते हैं और उनके लिए समर्पित होकर ऐसे सेवा कार्यों में रमने लग जाते हैं, जिन लोगों का असली चरित्र ही कुछ अलग होता है।

आमतौर पर हम जिन लोगों को बड़ा, प्रभावशाली, महान और लोकप्रिय मानकर पूजते और आदर करते हैं, उनकी असलियत से अनजान होने के कारण हम उनकी जी भर कर इतनी अधिक पूजा और चापलुसी करने लगते हैं जिसकी दस फीसदी भी हम अपने मां- बाप, गुरुजनों और वास्तविक आदरणीयों की नहीं करते।

जिन लोगों को हम समर्थ और स्नेही मानकर पूजते हैं, कुछ न कुछ चाहने के फेर में श्वानों की तरह तलवे चाटते रहते हैं, उनमें से अधिकांश लोग स्वयं ही बहुत बड़े भिखारी की तरह जीवन गुजारते हैं। वे भी किसी न किसी और के सामने किसी न किसी शुभाशुभ कर्म और लाभ को पाने के लिए क्रीत दासों और जरखरीद गुलामों की तरह गिड़गिड़ाते और पद- मद या कद की भीख मांगते नज़र आते हैं।

ऐसे लोगों के समक्ष याचना करना अपने माता- पिता, पूरखों और गुरुजनों से लेकर सभी श्रेष्ठीजनों का अपमान है। इससे हमारे पितर अप्रसन्न होते हैं और अनिष्ट करते हैं। ऐसे में दुनिया के तमाम प्रपंचों और निराशाओं को त्याग कर भगवान की भक्ति और साधना मार्ग अपनाकर ही व्यष्टि और समष्टि का कल्याण संभव है।

इसलिए शासन- प्रशासन के नुमाइन्दों और तथाकथित

प्रभावशाली लोगों की जी हूजूरी, चापलुसी और षोडषांग समर्पण भावों को छोड़कर परम सत्ता का आश्रय प्राप्त करके ही संसार का आनंद प्राप्त किया जा सकता है। लौकिक कामनाओं के वशीभूत होकर नेताओं, अफसरों और तथाकथित प्रभावशाली लोगों के पीछे भागने की मनोवृत्ति छोड़कर सर्वशक्तिमान परमात्मा का चिन्तन और आराधना करना चाहिए।

जो मांगना है, वह परमात्मा से ही मांगें, वही सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। हमारे जीवन का कोई भी कर्म ऐसा नहीं है, जो परमात्मा से मांगने पर पूर्ण नहीं हो सकता है। एक हजार लोगों की जी हूजूरी से बढ़कर है, दिन में एक बार भगवान का सच्चे मन से स्मरण, प्रार्थना और ध्यान।

हमारी दिनभर की जो भी कामना है, उसे प्रभु के सम्मुख स्पष्ट रूप से पूरी श्रद्धा और अनन्य भक्ति भाव से कह दें, फिर देखें काम कैसे पूरा होता है। इसकी बजाय हम और आप किसी गॉड फादर, गॉड मदर, आलाकमान, आलुकमान, भालुकमान या और किसी आदमी के इर्द- गिर्द चक्कर काटें, इससे कोई भला होने वाला नहीं है। जब एक बार हम ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा से समर्पित हो जाते हैं, तब हमारे सारे कामों की जिम्मेदारी, पारस्परिक नेटवर्किंग और सहयोग का काम ईश्वर अपने हाथ में ले लेता है।

हमारा कोई भी काम क्यों न हो, ईश्वर से निवेदन करने पर वह भक्त के काम पूरे करने के लिए सूक्ष्मातिसूक्ष्म तरंगों के माध्यम से समर्थ व्यक्ति को प्रेरित कर देता है और जरूरत के समय पर ऐसे व्यक्ति हमें मिल जाते हैं, जिनके सहयोग से काम पूर्णता प्राप्त कर लेता है। इसलिए अनन्य भाव से ईश्वर का चिंतन करना अधिक लाभकारी है।

**डॉ. दीपक आचार्य**
साहित्यकार बांसवाड़ा
मो. 9413306077

# चमचागिरी जिन्दाबाद

वे कहते हैं
बन्द करो चमचागिरी
पर कैसे कर पाएंगे वे ऐसा,
बातें कहना व
राय देना अलग बात है
और
असली जिन्दगी जीना दूसरी बात।
उन बेचारों की तो
जिन्दगी ही
टिकी हुई है चमचागिरी पर,
वे छोड़ दें तो
काफी आबादी
नहीं मर जाएगी भूखों,
फिर चमचे नहीं होंगे
तो जमूरों और मदारियों की
वाह- वाह कौन करेगा,
ये चमचे ही हैं
जिनकी शहदिया अमृत वाणी
और जयगान
सुन- सुन कर
गधे भी घोड़े और
हाथी हुए जा रहे हैं,
भौंदू भी शातिर और लोकप्रिय
होने लगे हैं,
सूअरों के जिस्म से
इत्र की गंध आने लगी है
और
कुत्तों के मुंह से
होने लगी है संगीत की बरसात,
चमचागिरी ही तो है
जो तय करती है
कुत्तों की बादशाहत
जिसके बूते
वे अपनी और परायी गलियों में
शेर होने का दंभ भरते हैं।
ये चमचे न होते तो
उन बेचारों की तो जान ही
निकल जाती
कई अधमरे पड़े रहते,
कई बेजान होकर,
ये चमचे ही हैं
जो फूंकते हैं
इन बिजूकों में प्राण तत्व
और अहसास कराते हैं उन्हें
जिनकी आत्मा कभी की
मर चुकी है
चमचे हैं वे भी,
आका हैं वे भी,
चमचागिरी के ही बूते केवल
इन मुर्दों के
हाथ- पांव चलते हैं,
दिमाग चलते हैं,
वे खुद भी चलते हैं
और जमाने को भी चलाते हैं।
बेमौत न मारो इन चमचों को
वंश ही समाप्त हो जाएगा
उनके आकाओं का
अगर चमचागिरी न रही
चमचे न रहे
फिर बिगड़ जाएगा स्वाद
अभिनय की दाल का
जिसके बूते ये बहुरुपिए
लोगों को दे रहे हैं
स्वाद का भ्रम
और शंकाओं का सलाद

**डॉ. दीपक आचार्य**
साहित्यकार, बांसवाड़ा
मो. 9413306077

# गण हो या तंत्र दोनों ही जवाबदेह रहें

प्रजातंत्र में समाज और जीवन के हर पहलू में गण और तंत्र दोनों ही एक दूसरे के लिए हैं। गण को तंत्र के प्रति श्रद्धावान, वफादार और विश्वासु होना चाहिए। इसी प्रकार तंत्र को भी गण के प्रति जवाबदेह एवं संवेदशील होना चाहिए। दोनों के मध्य आपसी भरोसे और पारस्परिक सहयोग भावना जितनी अधिक प्रगाढ़ होगी, उतना ही गणतंत्र का उल्लास प्रतिभासित होता रहेगा। विश्वास की यह डोर ही ऐसी है कि जिसके सहारे गण और तंत्र दोनों की उपादेयता, अस्तित्व और निरन्तरता टिकी रहती है।

गण और तंत्र दोनों जब मिलकर एक- दूसरे की उन्नति के लिए पूरी पारदर्शिता और कल्याणकारी भावनाओं से काम करते हैं, तभी गणतंत्र आशातीत सफलता हासिल कर सकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि गण अपने कर्तव्यों, अधिकारों और मर्यादाओं को समझे, उनका पूरा पूरा पालन करें।

तंत्र की भी जिम्मेदारी है कि वह गण के प्रति हर तरह से जवाबदेह रहे, गण की जरूरतों की यथासमय पूर्ति करता रहे। गण के अभावों को दूर करें, समस्याओं से मुक्ति दिलाए और यह प्रयास करे कि प्रत्येक गण सुनहरा जीवन पाने के प्रयासों में सफल रहे। आनंद और सुकून के साथ इस प्रकार जीवन निर्वाह का सुख पाए कि उसे हमेशा हर क्षण यह भान रहे कि तंत्र के कारण उसके जीवन को सम्बल प्राप्त हो रहा है। उसका तंत्र के प्रति विश्वास निरन्तर बढ़ता रहे, तंत्र को श्रद्धा से देखें, तभी माना जा सकता है कि तंत्र अपने लिए नहीं बल्कि देश के गण के लिए है।

जो तंत्र गण द्वारा निर्मित है, गण के लिए बना है, उसका पहला और आरंभिक कर्तव्य यही है कि वह गण के लिए समर्पित होकर निष्ठा के साथ काम करें, गण की उन्नति के लिए सोचे और गण को गुणवान बनाए, इतनी अधिक नेतृत्व क्षमता और प्रतिभा का विकास करें कि गण गणेश की श्रेणी पा जाए, गणों में श्रेष्ठ हो जाए और तंत्र के लिए हर प्रकार से प्रेरक एवं सहयोगी सिद्ध हो सकें।

असली गणतंत्र का उल्लास वही है, जिसमें गण और तंत्र दोनों प्रसन्न रहें और एक- दूसरे के बारे में किसी को कोई शिकायत न हो। न गण को तंत्र से कोई परेशानी हो, न तंत्र को गण के बारे में नकारात्मक सोचने का कोई मौका मिले। गण और तंत्र के बीच के रिश्तों पर ही टिका है हमारा यह गणतंत्र।

जहां कहीं यह पारस्परिक संतुलन गड़बड़ाने लगता है, वहां गणतंत्र हिलता- डुलता हुआ नज़र आता है। जहां संतुलन बना रहता है वहां सब कुछ ठीक ठाक रहता है। गणतंत्र के नाम पर कितना ही बाहरी दिखावा हम कर लें, ऊपर से भागीदारी रचा लें, एक दिन खुश हो लें और गणतंत्र के नाम पर उल्लास मना लें। इसका कोई मतलब नहीं है, यदि सालभर हमारे भीतर गणतंत्रोल्लास न रह पाए।

दुर्भाग्य से गण और तंत्र के बीच कहीं न कहीं कुछ दूरियां बढ़ती जा रही हैं। तंत्र अपने आपको अधिक से अधिक अधिकार सम्पन्न बनाए रखना चाहता है, हमेशा अपने अधिकारों की ही चिन्ता करता है और यह चाहता है कि तंत्र से जुड़े हुए तमाम अधीश्वरों का संप्रभुत्व हमेशा कायम रहे। तंत्र का अपना बुना हुआ ताना- बाना हमेशा बना रहे, चाहे इसके लिए किसी भी प्रकार की कुटनीति और षड़्यंत्रों का इस्तेमाल ही क्यों न करना पड़े।

हर तांत्रिक चाहता है कि उसका तंत्र पर दखल मरते दम तक बना रहे, तंत्र उसके लिए ही सारे इंतजाम करता रहे और तंत्र से उसका अलगाव कभी न हो पाए। ये सारे निरन्तर अधिकार सम्पन्नता की दौड़ में भागे जा रहे हैं। और उधर गण विचित्र किन्तु सत्य और अजीबोगरीब हालातों में जीने को विवश है। आजादी के बाद तंत्र के प्रति उसकी जो अगाध आस्था और विश्वास जगा था, वह हिलने लगकर पेण्डुलम की तरह हो गया है।

कभी गण अपने उद्धार के लिए तंत्र की ओर भागता है, आशाओं के विद्यमान होने तक तंत्र के इर्द- गिर्द चक्कर काटता रहता है, फिर निराश होकर अपने दूसरों गणों के खेमे में आ जाता है और रामभरोसे हो जाने का यथार्थ स्वीकार कर शांत होकर बैठ जाता है।

तंत्र अपने मुखौटे लेकर गणों की ओर आता है, फिर भी गणों पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ पाता। कारण स्पष्ट है कि तंत्र की नीति और नीयत में कहीं न कहीं कोई खोट है, जो मलीनताओं से साक्षात कराती है। भारतवर्ष में अब गणतंत्र नए दौर में प्रवेश कर चुका है, जहां गण का तंत्र के प्रति डोला हुआ विश्वास फिर पटरी पर आने लगा है और उधर तंत्र भी गण का ख्याल रखने के अपने विस्मृत दायित्व को फिर से याद कर चुका है।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 96729-80901

फिर भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है। तंत्र किसी मशीन की तरह चलते चले जाने वाला है, उस पर संवेदनाओं का कोई फर्क भले न पड़े, गण इस मामले में अत्यन्त भावुक और संवेदनशील है, उसका विश्वास जीतने के लिए तंत्र को अभी बहुत कुछ करना होगा। तंत्र को मशीनी भावों को छोड़कर संवेदनाओं में जीने की आदत डालनी होगी और तभी तंत्र के प्रति गण का विश्वास कायम हो सकता है।

गण संवेदनशील है और चाहता है कि उसके द्वारा सृजित तंत्र उसकी रचनात्मकता, जीवन निर्वाह और विकास की सारी परंपराओं को संबल प्रदान करें, उसके सुनहरे भविष्य के प्रति जवाबदेह रहे, पूरी पारदर्शिता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें। तंत्र को भी चाहिए कि वह ऐसे गण का नियंता होने का गौरव प्राप्त करें, जो कि विकसित और निरन्तर उन्नतिशील है न कि वह गण- गण को अभावों, समस्याओं और विषमताओं में धकेलने वाला सिद्ध हो।

लगता है कि तंत्र की मशीन अब पुरानी बहुत पुरानी हो चली है, उसके कई सारे पुराने और घटिया कलपुर्जे घिस गए हैं, इन्हें बदलने की आवश्यकता है। जंग लगने के साथ ही कुछ पुर्जे और नट- बोल्ट अवधिपार हो चुके हैं, इतने घिस चुके हैं कि इन्हें बदला नहीं गया तो तंत्र मरियल सी आवाज में चूं- चूं बोलने लग जाने वाला है और इन तमाम हालातों में बदलाव लाने का साहस कोई कर नहीं पा रहा है। इसलिए तंत्र गण का अपेक्षित विश्वास अर्जित नहीं कर पा रहा है।

इस विश्वास को लौटाने के लिए जरूरी है कि गणतंत्र का महत्व हम समझें। इसे केवल एक दिन, चन्द घण्टों तक सीमित नहीं रखकर सालभर कुछ ऐसा करें कि गण और तंत्र मिलकर एक दूसरे के लिए काम आएं, एक दूसरे के प्रति विश्वास पैदा करें। असली गणतंत्र का उल्लास तभी सालभर बना रह सकता है।

सभी को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

**डॉ. दीपक आचार्य**
वरिष्ठ साहित्यकार, बांसवाड़ा
मो. 9413306077

# द्वारकाधीश मंदिर के प्रधान मुखिया रहे स्व. बलदेव प्रसाद जी सांचीहर

प्रभु द्वारकाधीश की इस पावन नगरी कांकरोली में अनेकानेक खुबियों वाले नेक दिल इंसानों ने जन्म लिया और अपनी जिन्दगी में उत्कृष्ट कार्य और भली छवि छोड़ ईश्वर में लीन हो गए। उन्हीं नेक दिल इंसानों में एक थे स्व. बलदेव प्रसाद जी सांचीहर आज हम उन्हीं के बारे में बताने जा रहे हैं।

स्व. बलदेव प्रसाद जी सांचीहर का जन्म कांकरोली मन्दिर मार्ग स्थित स्व. हरकिशन जी सांचीहर के यहां पर हुआ। पिता श्री हर किशन जी सांचीहर व माता श्री केसर बाई सा की कोख से पैदा हुए श्री बलदेव जी का बचपन माता पिता की देखरेख और श्री द्वारकाधीश मन्दिर की छत्रछाया में बचपन में जब किशोरावस्था में पहुंचा तभी से आपकी नगर वासियों में चर्चा का विषय बनने लगी थी, आपकी कुशाग्र बुद्धि और भले व्यवहार के कारण आप नगर में सभी के चहेते और सबको सम्मान देने में कभी भी पीछे नहीं रहे। आपकी नम्रता और सद्व्यवहार के कारण ही आप सबके चहेते बने रहे। साहित्य और संगीत में आपकी रूचि थी। आप साहित्य और संगीत के अच्छे जानकार भी थे।

समय अनुसार आपका विवाह स्व. रमा बेन के साथ सम्पन्न हुआ। पिता श्री स्व. हरकिशन जी की मृत्यु के बाद घर की समस्त जिम्मेदारी आप पर आई और आपने उन जिम्मेदारियों को बखुबी निभाया। आपके तीन पुत्र श्री द्वारकाप्रसाद सांचीहर, स्व. प्रदीप जी सांचीहर, स्व. ओमप्रकाश सांचीहर व एक पुत्री नलिनी हुई। आपका ताउम्र द्वारकाधीश मंदिर के मुखिया के पद पर रहे और ब्रजभूषण जी महाराज के चहेते बने रहे। आपके सद्व्यवहार व शांतिपूर्ण जीवन का नगरवासियों पर बड़ा प्रभाव था, लोग आपकी इज्जत किया करते थे और सदैव हर समस्या में आपसे राय मश्वरा भी लिया करते थे। आपका सभी नगरवासियों से प्रेम भरा रिश्ता था। वे दयावान व संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे।

आपके बड़े बेटे श्री द्वारकाप्रसाद सांचीहर मेरे सहपाठी और अच्छे मित्र रहे हैं। वे भी अपने पिता श्री की तरह साहित्य व संगीत के शौकीन और जानकार है। अहमदाबाद कॉलेज में हिन्दी के प्रमुख प्रोफेसर के पद पर रहे। श्री द्वारकाप्रसाद सांचीहर ने अपने पिता श्री के आशिर्वाद से हिन्दी साहित्य जगत में कई कार्य पुस्तके, आलोचना और निबन्ध की पुस्तके दी है। वे आज भी अहमदाबाद में सेवानिवृत हो स्वतंत्र लेखन का कार्य कर रहे हैं। आपके दूसरे पुत्र श्री प्रदीप जी भी कांकरोली द्वारकाधीश मंदिर में मुखिया

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

पद पर रहते हुए अभी हाल ही में ईश्वर का प्यारे हुए हैं और तीसरे पुत्र श्री ओमप्रकाश असमय ही ईश्वर को प्यारे हो गए।

पुत्री नलिनी का विवाह गुजरात के खेरोल कस्बे में वल्लभाचार्य की बैठक के मुखिया व एक सम्पन्न परिवार में हुआ है, जहां व सआनंद अपना जीवन यापन कर रही है।

स्व. बलदेव प्रसाद सांचीहर की पत्नी स्व. रमा बेन को अड़ोस-पड़ौस के बुजुर्ग महिलाएं और लोग आज भी याद करते हैं। उनके स्नेह पूर्ण व्यवहार और लोगों को हर संभव सहायता के गुणों का भुलाया नहीं जा सकता। मैं द्वारकाप्रसाद का मित्र और सहपाठी था। अत: बचपन से ही मेरा उस घर में आना जाना लगा रहता था। मैंने द्वाराकाधीश मंदिर का जितना प्रसाद माता स्व. श्री रमा बेन के द्वारा स्नेह पूर्वक खाया उतना प्रसाद किसी ने नहीं खिलाया। वे बड़े स्नेह से रोज कुछ न कुछ प्रसाद जरूर खिलाती थी। पिता श्री बलदेव जी जैसा की मैं पूर्व में लिख चुका हूं। संगीत और साहित्य के जानकार व शौकीन थे। अत: हर दो तीन महीने में वे अपने घर पर स्थानीय संगीतकारों को बुलाया करते और संगीत की महफिल सजाया करते। मन्नु भाई, बाबूभाई, हरिदासजी, नन्दु उस्ताद, बंशी पंडित, करकरे साहब, बोहरा साहब आदि कई संगीत प्रेमी और संगीतज्ञ देर रात तक संगीत की महफिल सजाते थे और संगीत का आनंद लुटते थे। मैं इसका चश्मदीद गवाह हूं। क्योंकि में खुद उस महफिल में जाया करता था।

साहित्य में भी स्व. बलदेव प्रसाद की रूचि थी। उन्होंने भी कई काव्य छंद, और कविताएं लिखी, जिसे वे समय- समय पर सभा समारोह में सुनाया करते थे। उनके एक हास्य रचना 'सनम दाढ़ी क्या बढ़ाते हो, ऊपर से मुझ पर खुर्रा चलाते हो' बड़ी चर्चित रचना थी। प्रभु श्री द्वारकाधीश की वंदना में भी आपने कई छंद लिखें, जिसमें एक है-

नीरव निकुंजन में गोपीन के कुंजन में  
कुंज माला पहने, शोभित ब्रज राज है।  
प्रेम युक्त नजर से, चित को हरत है।  
कुंज को श्याम रूप, कृष्ण की छवि अनुप  
वर्ण- वाण दोऊ के, एक से दिखत है।  
बंशी के कर्ज को, चुकाई वो फर्ज है  
केम नवनीत अजी प्रोट में दर्द है मन भावन  
लुभावन है वृंदावन,  
द्वारकेश यश जाके पुराण रूप बनत है।

स्व. बलदेव प्रसाद जी के कांकरोली के खास मित्रों में श्री लाल जी उस्ताद व अध्ययन के दौरान नाथद्वारा में श्री नारायणलाल जी गौरवा उनके परम मित्र थे और आखिर वो दिन भी आया, जब वे अपने घर से निकले और द्वारकाधीश मंदिर में जाकर दर्शन किए और फिर वे नाथद्वारा जाकर श्रीनाथजी के दर्शन किए। फिर विट्ठलनाथ मंदिर में शाष्टांग दण्डवत कर अपने प्राण त्याग दिए। और ईश्वर को प्यारे हो गए। ऐसे सद्पुरूष पिता तुल्य महापुरूष को मेरी हार्दिक श्रंद्धाजलि।

**अफजल खां अफजल**  
वरिष्ठ साहित्यकार  
जलचक्की, कांकरोली

Rasing Awareness

# How To Prepare for a Board Exam: A Complete Guide

The Indeed Editorial Team comprises a diverse and talented team of writers, researchers and subject matter experts equipped with Indeed's data and insights to deliver useful tips to help guide your career journey.

Preparing for exams can be a challenging part of a student's life, yet performing well on them can help you secure a job post-graduation. The board exams, which are conducted for 10 and 10+2 students, can be particularly challenging. Board exams play a crucial role in deciding which course to study going forward in your life, so it is important that you prepare for it well. In this article, we examine how to prepare for a board exam and share some tips to help you. These are some of the steps that can help you to figure out how to prepare for a board exam:

## 1. Prepare a schedule

To study for a board exam, it is important that you give yourself ample time to prepare. Create a schedule and follow it. Thoroughly familiarise yourself with the syllabus of the exam and plan accordingly. Make sure that you have a set routine for yourself so that you know exactly when to study and when you can have time for leisure. During your leisure time, consider taking part in activities you thoroughly enjoy to spend some time without thinking of your upcoming exams. This can help you refocus when it is time to study again.

## 2. Find a calm environment

Study where you are free from distractions and loud noises. Keep phones and other electronic devices away so that you can concentrate on your studies. If you are studying in a room where people around you are talking or a TV is playing, chances are that you may take more time to cover the material. Try to identify a time and place where you are most productive. Many students prefer studying early in the morning because that is when they feel the most productive and focused. Others prefer to study at night from the library.

## 3. Prioritise more important topics :

Start by prioritising important topics so you can make sure your understanding of the subject is stronger. There are sub-topics of nearly every subject that your board exams may focus on more, so it is important to feel comfortable with the information. For example, calculus typically covers about 30 to 40% of the mathematics questions in a 10+2 board exam.

Try to cover such sections thoroughly before moving on to other sections, where you can afford to spend less time either because you are more familiar with the topic or because the subject holds less weight in the exams. If some subjects are challenging for you, consider dedicating more time to them. Highlight, underline, take notes, bookmark important pages and re-read material to facilitate your learning process.

## 4. Join a study group :

Being part of a study group can have several advantages. It is a great way to figure out your strengths and weaknesses. Sharing notes and teaching each other can help you understand concepts thoroughly. Discussing important points as a group may help you articulate concepts logically. This may help in bringing clarity to your answers when you write them and further your understanding of key concepts you need for the exams.

## 5. Make use of online resources

Consider using online resources like videos, articles and infographics to study topics. Use these resources efficiently to supplement your regular classes and notes. Sometimes, videos, visual presentations or podcasts can help bring more clarity to topics you have learned about. Mixing external resources with your curriculum can help make the content interesting, which may motivate you to study more.

## 6. Test yourself

After you have covered most topics, test your knowledge by navigating a previous year's questions. This way, you can assess your knowledge, identify areas for improvement and focus on topics that may require more study time. Try to do these practice tests in a similar environment and time frame as the actual exam so you build your comfortability with this format. Attempting practice tests can also reinforce the information you have already retained, and this can help in lowering stress during exam time.

## 7. Revise regularly

Revising your study materials regularly at a fixed interval helps you keep them fresh in your mind. Take detailed notes when studying a topic, as this helps to recall the important points faster at the time of revision. You can also make use of flashcards or charts to revise your study materials quickly.

## 8. Get sufficient rest

It is important that you get a good night's sleep before your exam. The likelihood is higher is you allow yourself to rest and you may find that you can recall information easier too. Try not to study anything new the night before the exam. Instead, refer to notes you have already created and studies over.

लघु कथा

# लॉटरी खुलगी

मजूर मगनीराम मजूरी कर आपणे घरे जाय रहो हो। मारग माय एक लॉटरी वालो मिल्यो। कह्यो के इण भांत जिन्दगीभर मजूदरी करतो रेवेला तोई थारे कने कदेई पइसो वेणो कोईनी, म्हूं थने एक अटकल बताऊ उण मुताबिक थूं कर थारो भाग जाग जासी। ये लॉटरी रा टिकट है। इण री कीमत पांच रीपियां है। जद थारे भाग सूं लॉटरी खुल जाएगी, तो पांच करोड़ रुपए थने मलसी। पछे देख थारा ठाठ अर बाट। थारो रूतबो बढ़ जासी। थने सगला मगनीरामजी केवा लाग जासी अर मजूरी नी करनी पड़ेला।

जद इतरां सपनां अर सुख बतायो तो मगनीराम मूलक कर बोल्यों- आज रा ये पांच रीपिया म्हूं थने देअर लॉटरी रो टिकट लेऊं। अबे आगे थै म्हने केहता रेवजो। म्हने खबर नी पड़े के लॉटरी कद खुले। लॉटरी वालों टिकट देअर परोग्यो।

टेम बीततो ग्यो। जद लॉटरी रो ड्रा खुल्यो। लॉटरी रा एजेन्ट ने पतो लोगों के पांच करोड़ री लॉटरी तो मगनीराम रे हीज खुली है। एजेन्ट मन में विचार कीदो के म्हूं अबार ही जाय ने कहूं तो वो इण खुशी ने हजम नहीं कर पावेला, सायत बावलो व्हे जावेला। काई न काई उपाय करणो जरूरी है। एजेन्ट रे दिमाग माय एक बात सूझी। एजेन्ट एक मनोचिकित्सक डॉक्टर रे कने जाय ने पूरी बात राखी अर भलावण दी कि अबे मगनीराम ने वंचावणों आपरी जिम्मेदारी हैं। नी तो वो खुशी रे मारे बावलो व्हे जावेला। अर हार्ट अटके सूं मर जासी। आप धीरे-धीरे उणने समझाई दीजो। मनोचिकित्सक आपणी दो सौ रीपिया री फीस रा स्वास्थ्य रे कारणे मगनीराम री झुपड़ी पे ग्यो। उणने मांचा माथे बैठाय ने बात उगेरी। डाक्टर साहब केवा लागा। मगनीराम थू मजूरी करें अर थारे कने अणचिंतिया पंचास हजार रिपिया आय जावे तो थु काई करसी।

मगनीराम बोल्यो के मारे माथे लेणो घणो। उण में सू आगता वोराजी ने चुकाऊला। डॉक्टर साहब आगे बोल्या के जाणे थारे कने दो लाख रीपिया आई जावे, तो काई करेला। मगनीराम बोल्यो के सारो करजो चुकाय ने सुख री नींद सोऊला। अबे डॉक्टर साहब कह्यो के जद थारे कने दस लाख रीपिया वेई जावे, तो काई करसी। मगनीराम बोल्यो के मांय बाप म्हारे कने दस लाख वेई नी सके।

फेर भी आप कह रह्या हो के जाणे वेई जावे तो म्हूं धरम् ध्यान तीरथ यात्रा में खरच करूंला। अबे जद मगनीराम रो मन गंभीर

लाग रह्यों हो तो डॉक्टर साब बोल्या के जब एक करोड़ रीपिया रो थू धणी वण जावे तो कीण तरे सूं रेवेला।

मगनीराम बोल्यो साब मने भरमाओ मती ये सब दिन रा सपना ज्यूं वातां लागरी है। डॉक्टर साब बोल्या के एक मिनट रे वास्ते सोच के अस्यो वेई जावें तो ? मगनीराम कह्यो के म्हारा सगा गिनायता अर समाज सारू खरच करूलां अभिमान मन में नी आवा दूं। अबे डॉक्टर साहब लास्ट डोज दीदो अर हिम्मत कर बोल्या के थारे पांच करोड़ रीपियां वेई जावे तो काई होसी।

मगनीराम हाथ जोड़कर बोल्यो के साब अस्या भाग म्हारा कठे। म्हने विश्वास है के मारे कने पांच करोड़ नही व्हे सके अर वेई भी जावे तो म्हूं आप जस्या सज्जना रे नामे कर दूं। आप डॉक्टर भगवान बरोबर हो अर गरीबा री सेवा करोला।

डॉक्टर साब कागज निकालयो मगनीराम रे सामै रखयो। उण पर लिखयों के मारे जद लॉटरी खुल जावे तो पांच करोड़ रीपिया म्हू डाक्टर साब रे नामें करूं इण रूपया माथे म्हारे काई अधिकार कोनी। जब मगनीराम हाथ रो अंगूठो लगायो। आ देखता ही डॉक्टर साहब रे खुशी रे मारे हार्ट- अटैक व्हेई गियो।

राजा होवे या रंक, सब ने व्यापै खुशी अर गम रो डंक।

**नारायणसिंह राव**
साकेत साहित्य संस्थान
गणेश नगर, कांकरोली

# हेप्पी न्यू ईयर

ओ माई डियर, हेप्पी न्यू ईयर।
अब आ भी जाओ, दूर ना जाओ सनम,
तुम रहो सदा ही, मेरे दिल के नियर।
ओ माई डियर...।।
करता हूं वादा, ओ जानेमन तेरे लिए,
छोड़ दूंगा पिना, रम, जीन,
व्हिस्की और बियर।
ओ माई डियर,....।।
छोड़ के प्रिया मुझे, दूर ना जाओ तुम,
पुरानी बातें भूला दो क्यूंकि,
नववर्ष है आ जाओ हियर।
ओ माई डियर,....।।
ग़र तुम मुझे दिल से चाहती हो
तो छोड़ो दुनिया से डरना,
अब सबको बता दो, पसन् क्लियर।
ओ माई डियर,....।।
न तुम मुझे भूला सकती हो,
ना मैं तुम्हें भूल पाऊंगा,
हमसफर मेरे एकबार मुस्कुरादो,
अब न बहाओ टियर।
ओ माई डियर,....।।
हंसते- मुस्कुराते बीते हर पल,
प्रीतम चाहता है,
तुम खुश रहो सदा,
मौज़ मस्ती में बीते ये ईयर।
ओ माई डियर, हेप्पी न्यू ईयर।।

**बख्तावरसिंह चुंडावत प्रीतम**
आमेट, राजसमंद
मो. 9413287301

# नया साल

ग़मज़दा दिलों में खुशियां लौट आए।
ये नया साल कुछ इस तरह आए।।

मुड़कर भी देखे नहीं बीते हुए कल को।
अब जो कल आए वो बहारे लाए।।

अब ना रहे गम का कोई नामों निशां।
मन गुदगुदाए खुशियों के तराने गाए।।

बहुत हो चुका है गरीबों पे सितम।
अब न किसी मजबूर को सताया जाए।।

खत्म हो जाए जहां से नफरत की आंधियां।
अब तो कोई फरिस्ता अमन का पैगाम लाए।।

इज्जत कई मासुमों की उजड़ी बहुत उजड़ी।
अब तो वहशी दरिन्दों से इनको बचाया जाए।।

हाथों को काम और पेट को रोटी मिले।
यह भी है राजधर्म इसे भी निभाया जाए।।

**अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल**
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

# शिकवा किस्मत का न करना

शिकवा किस्मत का न करना
गम से घबरा कर न मरना।

माना ये दुनिया है ज़ालिम
तुम न इस दुनिया से डरना।

नफरतों की है ये दल दल
तुम इधर से मत गुज़रना।

अश्क पी लेना मगर तुम
प्यार को रुसवा न करना।

तुम न पहचानो जो खुद को
इस कदर भी मत संवरना।

हो सका न निबाह तुम से
तुम न इस सच से मुकरना।

**डॉ. लोक सेतिया**
फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 9416792330

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

व्यंग्य

# किताब की दर्दनाक दास्तां

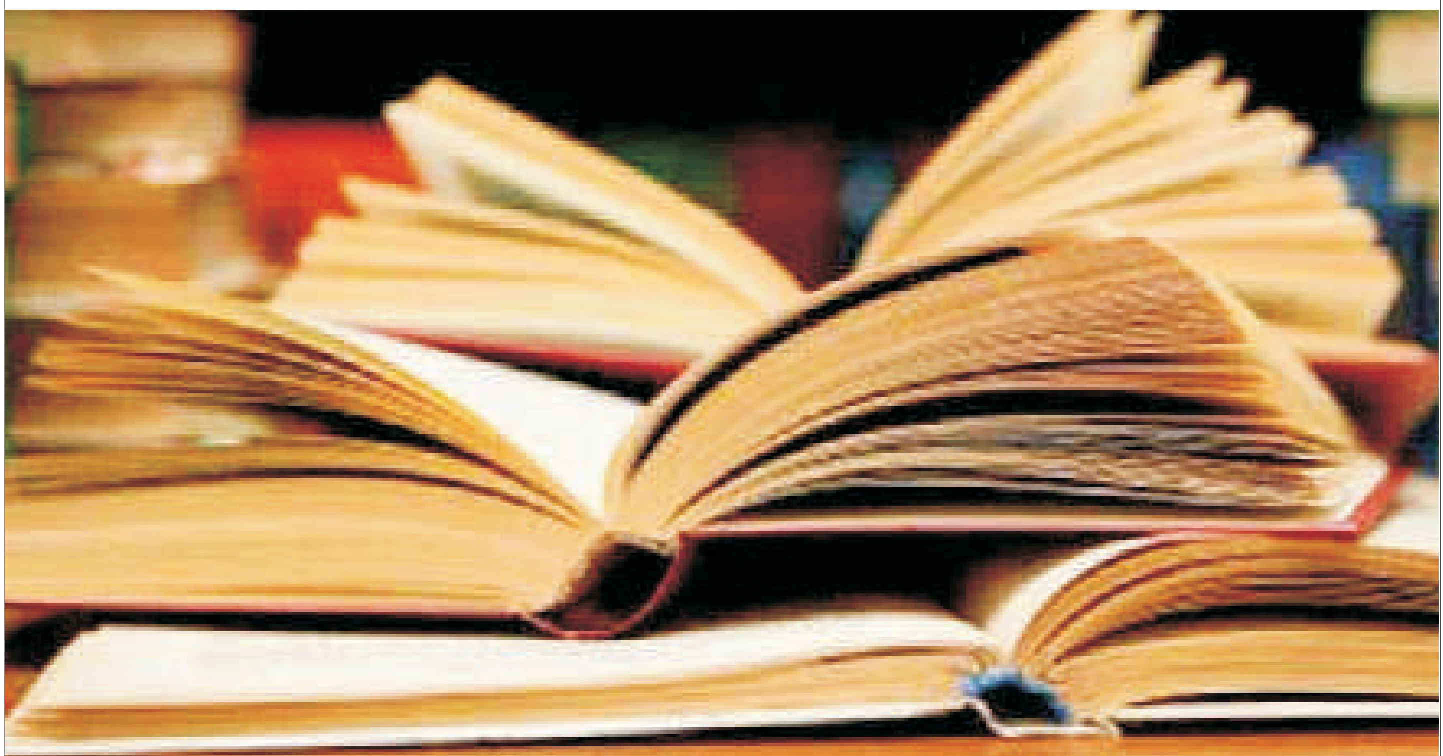

ये लिखने वाला भी नहीं जानता था, छापने वाले को भी शायद इसकी उम्मीद नहीं थी, किताब की बदनसीबी थी, जो नहीं होना चाहिए था, वहीं हो गया। क़िताब की ये व्यथा कोई समझेगा भी कैसे, जब किसी को कागज़ की लिखावट, छपाई काले रंग की स्याही की पढ़ने को लुभाती नहीं है। कहीं किसी कोने में पड़ी हुई है, कितनी किताबों के बीच दबी हुई ख़ामोश हैं, सब की सब अपना अपना अकेलापन अकेले सहती हुई। कोई किताब नहीं जानती, उसके साथ पड़ी किताब के पन्नों पर क्या लिखा है। किताबों में क्या क्या नहीं है, खुशियां हैं, संवेदनाएं हैं, शिक्षा है, ज्ञान है, जीवन की वास्तविकता से काल्पनिक परीकथा व मनोरंजन तक सब है। दु:ख, दर्द, मानवीय सरोकार से प्यार मुहब्बत, रिश्ते, सामाजिक संबंध की समझ शामिल है, अथाह समंदर है, लेकिन जब कोई भीतर झांकता ही नहीं, तो कंकर- पत्थर हीरे मोती की परख कैसे होगी। कभी किताब को सर पर माथे पर लगाते थे। आजकल किताब रद्दी वाले, कबाड़ी के झोले में सिसकती दिखाई देती है।

आपको हैरानी हो रही है, तो बताना ज़रूरी है, सुबह गली से गुज़रते कबाड़ी पर नज़र पड़ी तो बिल्कुल नई नवेली दुल्हन जैसी किताब दिखाई दी, मुझे छत पर खड़े हुए। आवाज़ देकर रोका तो उसको लगा मुझे भी कोई पुराना सामान बेचना है। मैंने घर से बाहर गली में जाकर बात की और किताब की बात की तो उसने कहा आपको चाहिए तो दस रुपए कीमत है। अचरज से सवाल किया जिसने बेची दस रुपए में बेची है, नहीं साहब पांच रुपए में ख़रीदी है और दस में बेचूंगा । खैर मैंने उसको मनचाहे दाम देकर किताब खरीद कर सर माथे लगाया और मां सरस्वती से क्षमा याचना की और कहा जिस किसी ने भी ऐसा अपराध किया, उसको माफ़ करना।

कितने बड़े लेखक की पुस्तक है और कितनी बहुमूल्य कालजयी रचना बताकर इक और जुर्म नहीं करना चाहता। फिर भी अनचाहे ही सालों पुरानी घटना याद आ गई है। लिखता था अखबार, पत्रिकाओं में भी रचनाएं छपती थी और कई साथी सलाह देते रहते थे किताब छपवानी चाहिए। महानगर जाना हुआ तो इक प्रकाशक जो खुद बड़े नाम वाले लेखक भी थे, उनसे मुलाक़ात करने चला गया। उनको अपनी पांडुलिपि देकर निवेदन किया कि पढ़कर बताएं रचनाएं छपने के काबिल हैं भी या नहीं। जैसे कोई हंसता है, उपहास करने जैसा जवाब मिला। उन्होंने कहा हिंदी में किताब पढ़ता कौन है, ये तो आपको खुद पैसे खर्च कर दोस्तों को नि:शुल्क बांटनी पड़ती है। उसके बाद कितने पन्नों की, कैसी किताब, कितनी प्रतियां, कितने

हज़ार में छपेंगी, हिसाब समझाने लगे थे। ये सपने में भी नहीं सोचा था कि बस किसी तरह निकला बाहर भागा तेज़ी से सड़क तक आते आते सांस चढ़ी हुई थी।

तीस साल बीत गए, फिर किसी प्रकाशक से मिलने का हौंसला नहीं कर सका। जीवन में बहुत उल्टा सीधा कर लिया, तब विचार आया चलो, ये भी कर देखते हैं, कुछ नहीं होगा, तो तजुर्बा ही सही। ये आदत रही है आगे बढ़े कदम रुकते नहीं और मंज़िल की चाह रखे बगैर सफर करता रहा हूं। जिस जहां की, जिस मंज़िल की तलाश मुझे है, शायद इक ख्वाब ही है, जिसको हक़ीक़त बनाना मेरी आरज़ू है। सब सोच समझ कर पूरी तैयारी से किताब छपवाने का हौसला किया और किताब छपवा कर समझा, सब शानदार अनुभव है। लेकिन कहां मालूम था कि अभी दुश्वारियां ही दुश्वारियां सामने हैं। किताब छपना काफी नहीं, पाठक तक किताब पहुंचाना, उसको पढ़ने को उत्साहित करना टेढ़ी खीर है। लिखने वाला फिर उसी मोड़ पर खड़ा होता है, कभी अखबार, पत्रिका वाले खूब आमदनी करते हैं, लेकिन लिखने वाले को कोई कीमत नहीं मिलती। किसी बंधुआ मज़दूर की तरह या नाम की मानदेय राशि जिससे कोई जीवन यापन नहीं कर सकता है। नवोदित लेखक को आसानी से सोशल मीडिया पर किताबों के सौदागर मिलते हैं, जो बिना परखे रचनाओं की किताब छापने का कारोबार कर खूब कमाई करते हैं। उसके बाद किताब की हालत पर कोई ध्यान नहीं देता, कोई खुद को लेखक समझने, कहलाने पर संतोष कर लेता है। कुछ हज़ार खर्च कर और कोई किताबें छापने का, मुनाफ़े का व्यापार कर मौज से रहता है। कितनी तरह की किताबें कहां अपनी बदहाली पर आंसू बहाती हैं, किसी को अपनी दर्द भरी व्यथा, कथा सुना नहीं सकती हैं। उसके आगे की दर्द भरी दास्तां कैसे लिखें, किसको पढ़नी है, क्योंकि लिखने वाला भी इक दौड़ में शामिल होने को अभिशप्त है। इनामात सम्मान, नाम, शोहरत की भागम भाग में वास्तविक उद्देश्य समाज को आईना दिखाने का बदलाव का न्याय समानता का भेदभाव समाप्त करने वाले देश समाज दुनिया के निर्माण का पीछे छूट जाता है ।

**डॉ. लोक सेतिया**
एससीएफ 30 मॉडल टाउन
फतेहाबाद, हरियाणा
मो. 9416792330

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 96729-80901

# मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती........................................................................................................................................

पता ................................................................................................................... राज्य ..........................................

फोन (निवास) ........................................मोबाइल ........................................ई-मेल ..................................................

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु .................................का डी.डी या चैक नं. .........................................................................

तिथि ........................................... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ...........................................................................................

**(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)**

| अवधि | अंकों की संख्या | कवर मूल्य | बचत | सब्सक्रिप्शन दर |
|---|---|---|---|---|
| 1 वर्ष | 12 | 240 | 40 | 200 रुपए |
| 3 वर्ष | 36 | 720 | 220 | 500 रुपए |

**जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत**

**कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,**
**कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,**
**जिला-राजसमंद (राजस्थान)**

### नियम और शर्ते :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

# राबिया और इस्लाम

राबिया एक प्रसिद्ध मुसलमान-सूफी मत की फकीर थी। वह दिन रात चलते-फिरते, उठते, सोते-जागते तथा कार्य करते समय अल्लाह का नाम लिया करती थी। सभी धर्मो के लोग, उसके भक्त थे। बोल चाल में वह बहुत मधुर वाणी बोलती थी। वह हमेशा धार्मिक चर्चा ही करती रहती थी। सांसारिक चर्चाओं से उसका कोई लेना-देना नहीं था।

राबिया गांव के बाहर एक झोंपडी बनाकर रहती थी। एक दिन उसकी झोंपडी पर प्रसिद्ध सूफी फकीर हुसैन साहब आए। राबिया उनको देखकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने हुसैन साहब को पेड़ के नीचे एक चटाई बिछाकर बैठाया। उनको पानी पिलाया और उनसे निवेदन किया कि हुसैन साहब आप भोजन यहीं करके जाएंगे। मैं जल्दी से खाना पका देती हूं। आप मेहरबानी कर खाना खाकर ही जाए। हुसैन साहब ने राबिया का निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया । वे बोले- ''राबिया जब तक तुम खाना तैयार करती हो, तब तक मुझे कोई धार्मिक पुस्तक या कुरान -शरीफ पढ़ने के लिए दे दो, ताकि मैं उसे पढ़ लूं।'' राबिया ने हुसैन साहब को कुरान शरीफ पढ़ने के लिए दे दी और वह झोंपडी में जाकर भोजन बनाने में व्यस्त हो गई। थोड़ी ही देर बाद हुसैन साहब ने बड़े गुस्से में आकर आवाज लगाई- ''राबिया यहां आओ।'' राबिया समझ नहीं पाई कि हुसैन साहब ने इतने गुस्से में आकर उसे क्यों बुलाया है ?

राबिया थर-थर कांपती हुई हुसैन साहब के पास पहुंची। उसने पूछा- ''आप इतने गुस्से में क्यों है ? मुझसे क्या अपराध हुआ है?'' दरअसल हुसैन साहब ने कुराने पाक को पढ़ते हुए देखा कि उसमें एक लाईन को स्याही से काटा हुआ है। हुसैन साहब ने राबिया से उसी आवेश में पूछा-''राबिया। कुराने पाक में इस लाईन को किसने काटा है ?'' राबिया की आंखों में आंसू आ गए। उसने कांपते हुए कहा- ''हुसैन सा. यह लाईन तो मैंने ही काटी है।'' हुसैन सा. बोले- ''राबिया! तुमने ? तुम जानती हो कुराने पाक तो खुदा की जबान है और तुमने उसे काट दिया?'' राबिया ने बड़ी नम्रता के साथ उत्तर दिया- ''हुसैन साहब! उसमें लिखा था कि खुदा से तो प्यार करो और शैतान से नफरत! जिन्दगीभर मैंने खुदा को ही पुकारा है। इस्लाम को समझने के बाद मेरे दिल में केवल प्यार ही बचा है। यदि अल्लाह मुझे मिले तो उन्हें प्यार ही करूंगी और शैतान भी मिल जाए तो उसे मैं प्यार ही करूंगी। मेरे भीतर नफरत बची ही नहीं, तो नफरत कहां से लाऊं।''

राबिया का उत्तर सुनकर हुसैन साहब खड़े हो गए। उन्होंने कहा- ''मैंने जिन्दगी भर इस्लाम को पढ़ा है, किन्तु तुमने इस्लाम को सही अर्थों में समझा है।'' राबिया बोली - हुसैन सा. अल्लाह तो सारी कायनात का मालिक है। वह तो सभी का बाप है। उसने सभी को पैदा किया है। इस दुनियां का कोई बाप भी अपनी औलाद को एक दूसरे से नफरत करने की शिक्षा नहीं देता। हर बाप यही कहता है कि ''सभी भाई-बहन प्यार से रहो। एक दूसरे से कभी मत झगड़ना। तो क्या इस कायनात का बाप हमें आपस में झगड़ने और नफरत करने की तालीम देगा? यह सोचने की बात है। यही सोचकर मैंने जिन्दगी में केवल प्यार को ही बचाए रखा है।''

राबिया ने फिर कहा - हुसैन साहब ''जिन्दगी भर मैं अल्लाह के करम पर जिन्दा रही हूं। मैंने अल्लाह के अलावा किसी को याद नहीं किया। इस्लाम के बारे में इस बुढ़ापे में मैंने जो निष्कर्ष निकाला है। वह मैं आपको बताती हूं। मेरी समझ से इस्लाम का मतलब है- प्यार और मोहब्बत। इस्लाम से मैंने दो ही बाते सीखी है। पहली - सभी से प्यार और मोहब्बत से रहो, किसी से नफरत मत करों। अल्लाह की औलाद से नफरत करने से अल्लाह कैसे खुश रह सकते हैं ? दूसरी बात यह कि अल्लाह तुम्हें जैसे रखे, उसी में खुश रहो। कभी शिकायत मत करो। कहा भी है - ''राजी हूं मैं उसी में, जिसमें तेरी रजा है।''

**( यमुना शंकर जी दशोरा की पुस्तक ''दृष्टान्त - सुधा'' से साभार )**

**अफजल खां अफजल**
**वरिष्ठ साहित्यकार**
**जलचक्की, कांकरोली**

पुस्तक समीक्षा

# डॉ. गोपाल राजगोपाल की अथः श्री कोरोना कथा

राजसमंद कांकरोली के पड़ोसी तीर्थ स्थल फरारा महादेव (फरारा) में जन्में डॉ. गोपाल राजगोपाल आचार्य पद पर सामुदायिक विज्ञान विभाग आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज उदयपुर में कार्यरत हैं। साहित्य की अनेक विधा में आपने पुस्तकें लिखी है। अब तक आपके दो गजल संग्रह, दो दोहा संग्रह, राजस्थानी और मेवाड़ी के व्यंग्य संग्रह और बाल कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। देश- विदेश की कई पत्र पत्रिकाओं में आपकी गजलें, दोहे, बाल रचनाएं एवं लघु कथाओं का प्रकाशन हुआ है। आपकी कुंण्डलियों का संग्रह भी शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाला है।

आज हम आपकी सन् 2022 में नई-नई प्रकाशित पुस्तक अथ: कोरोना कथा के बारे में बताने जा रहे हैं। एक चिकित्सक होने के नाते कोरोना महामारी में आपने कोरोना क्यों ? कैसे ? और किस तरह फैला उसके बचाव और उपायों के अलावा उसकी विकरालता के बारे में दोहों, कविताओं, कुंण्डलियों, लघु कथाओं, कहानियों, एवं गीत के माध्यम से हिन्दी और राजस्थानी मेवाड़ी भाषा के द्वारा बहुत ही सरल और मन को छुने वाली शैलियों में कोरोना महामारी को दर्शाया है। सर्वप्रथम आपने दोहो के द्वारा कोरोना के बारे में कुछ इस तरह लिखा है-

नहीं सफर में चाहिए, अब हाथों में हाथ।
छह फीट की हो दूरियां, रहना हो गर साथ।।
अगर न होते फ्रंट पर, ये कोरोना-वीर।
मिट जाती संसार की, मनमोहक तस्वीर।।
तुने जंगल काट कर, काटी जीवन डोर।
वेंटीलेटर देख के, मत हो भाव-विभोर।।
ऑक्सीजन भी चाहिए, ये कर दो ऐलान।
नाकाफी है जान को, रोटी -वस्त्र -मकान।।
लाशें भी करने लगीं, आकर जहां विहार ।
गंगा है या जोदड़ो, का इक स्नानागार।।
कोविड ने दिखला दिया, कुछ ऐसा भी वक्त।
पानी से पतला हुआ, जो था गाढ़ा रक्त।।
'कोविड' लिखबा लाग ग्यो, जद किस्मत री रेख।
बेल विधाता है कठे, थारा लिखिया लेख।।

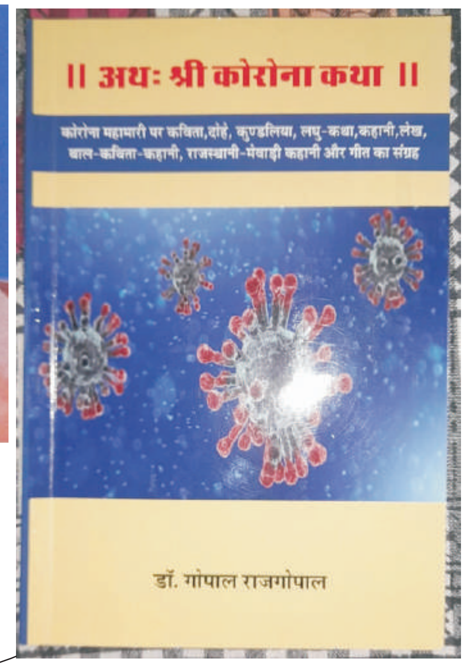


**डॉ. गोपाल राजगोपाल व उनकी पुस्तक**

ऐसे ही कोरोना से संबंधित लगभग 64 दोहे इस पुस्तक में एक से बढ़कर एक दिए गए है। साथ ही राजस्थानी, मेवाड़ी दोहे भी शानदार बन पड़े हैं। कोरोना की कुंण्डलिया भी कवि ने लगभग 12 के करीब इस पुस्तक में सम्मिलित की है, जो एक से एक बढ़कर अच्छी बन पड़ी है-

कोरोना ने कर दिया , उनको घर में कैद।
मेल -जोल के हो गए, रिश्ते सब विच्छेद।।
रिश्ते सब विच्छेद , बंद अब पार्लर जाना।
आइब्रो-मेकअप-फेसियल, भूले करवाना।।
कहे राजगोपाल, स्वयं पर आता रोना।
छीन गया सौन्दर्य, अरे पापी कोरोना।।

प्रेमिका से कर रहा, प्रेमी ये तकरार।
रखकर दो गज दूरियां, कैसे होगा प्यार।।
कैसे होगा प्यार, जुगत क्या कहो लगाए।
कसमें-वादे प्यार के, किस तरह निभाएं।।
कहे राजगोपाल, प्यार है बैरी जी का।

दे दे 'फ्लाईंग–किस्स', सपट बोली प्रेमिका।।

इसी तरह एक लम्बी कविता 'हां मैं वही चिकित्सक हूं...'' बहुत ही भाव पूर्ण अच्छी कविता है, जिसे पढ़कर चिकित्सक के प्रति समाज की सोच पर बहुत कुछ सोचने को मजबूर होना पड़ता है। तीन लघु कथाएं भी इस पुस्तक में कोरोना से संबंधित दी गई है। परिवर्तन , सेनिटाईजर एवं मजबूरी।

लघु कथा: मजबूरी में डॉ. साहब , अब तकलीफसही नहीं जाती, सांस लेना मुश्किल से मुश्किल होता जा रहा है, आप कुछ करते क्यों नहीं।

वेंटीलेटर पर लेने की तैयारी चल रही है। इतनी बडी मशीन की क्या जरूरत है। कोई तो दवा या इंजेक्शन होगा, जो सांसो की तकलीफ में राहत दे। डॉ. रोगी के मंतव्य को समझ चुके थे, लेकिन मजबूर थे।

कोरोना के बारे में इसी पुस्तक में तीन कहानियां भी दी गई है। साहब का मास्क, तोलाराम का जीव और मजबूरियां तीनों ही कहानियाँ हृदय को छू लेती है। एक लेख, मौसम है मास्कियाना, एक बाल कहानी ''अहिंसा के मार्ग पर वनराज'' और ''जंगल में कोरोना'' बाल कहानी भी पठनीय है। राजस्थानी मेवाड़ी में ''कोरोना रो काल जीवा रो जंजाल'' और ''कोरोना रो जबरी जाल फंस्या गैर की गेरकीलाल'' आलेख अच्छे बन पड़े हैं।

पुस्तक के बारे में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, अतिरिक्त जिला कलेक्टर उदयपुर ओ.पी. बुनकर , प्रधानाचार्य आर.एन.टी. आयुर्विज्ञान महाविद्यालय उदयपुर, प्रमुख सचिव राज्यपाल राजस्थान डॉ. देवेन्द्र कुमार धोदावत, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद उदयपुर की निदेशक प्रियंका जोधावत ने शुभकामना संदेश के साथ पुस्तक को कोरोना महामारी से बचाव व इसकी क्रूरता के सटीक वर्णन के लिए इस पुस्तक को पठनीय बताया है।

आशा है इस पुस्तक का साहित्य जगत में उचित मूल्यांकन होगा और लेखक को और भी बहुत कुछ लिखने का प्रोत्साहन मिलेगा।

**अफ़जल खां अफ़ज़ल**
**वरिष्ठ साहित्यकार**
**जलचक्की, कांकरोली राजसमंद**

लघु कथा

# आखातीज

पिंकी छोरी, घणी प्यारी अर फुटरी ही। स्कूल मायं तो वा रोजिना हरेका कामां माय आगे रेवती। टूर्नामेन्ट व्हे या वाद विवाद या पछे निबंधा री होड़। हमेशा भाग लेवणों अर पहलो स्थान पावणों उण रो असुल हो। एक दिन स्कूल रा मंच माथे वाद-विवाद री होड़ में बाल विवाह रे विपक्ष में एक नारड़ी री भांत गरज रेई ही।

वटा बाद तो कक्षा पांच सूं लेर दस तक आए बरस बाल विवाह रे विपक्ष में बोलवा रो वन्ने आच्छो अभ्यास व्हेई ग्यो। वणी खुद यो धार लीदो कि इण समस्या रो समाधान म्हुं करूंला अर समाज में एक नवी चेतना जगाकर अलख जगाउला कि आपणी नान्हीं-नान्हीं कन्याओं ने बालपणा में ब्याह नी करावणो।

सगलां मारसाब बन्ने घणी शाबासी देवता अर मंच मान करता। उण री वढाईयां करता कोनी थाकता। म्हुं खुद भी पिंकी ने सामाजिक क्रांति री ज्वाला जाणतो हो। अर सोचतो हो कि शारदा एक्ट री आ पालना करेला अर करावेला।

पण एक दिन पिंकी म्हने कुंकु पत्रिका दीदी। पत्रिका देखता ही म्हारी तो धरती खिसकगी। कक्षा ग्यारह में पढ़ण वाली पिंकी रो ब्याव अणी आखातीज ने ही है और उण री कुंकु पत्रिका में नाम देख मने तो चक्कर आवा लाग ग्या कि पिंकी सगलां सूं मोटी बहिन हैं। उणरे सागे छोटी बेना निर्मला, राधा, कमला, मीना रो भी ब्याव है।

वाह पिंकी शाबास थारा वे बुलदं ईरादा, भाषण, नारा, कठे ग्या ? केहणी और करनी में इतरो फरक कीण तरे आय ग्यो। लागे कि माईत अर समाज री थोथी मरयादा आगे सगली वातां भूलणी पड़े है।

काई या घर वाळा री मजबूरी ही या ओर कोई कारण रीयो। जो वेवे, पण अणी छोरी री जिन्दगी तो दांव पे लागी री है। अबे ये नारा, जयकारा लगावा रो समाज में काई फायदो मली रो है। यह सबाऊ मोटो सवाल है, जणी पे सबने होचवा री जरूरत है।

**नारायण सिंह राव 'निराकार'**
साकेत साहित्य संस्थान
गणेश नगर, कांकरोली
जिला राजसमंद

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

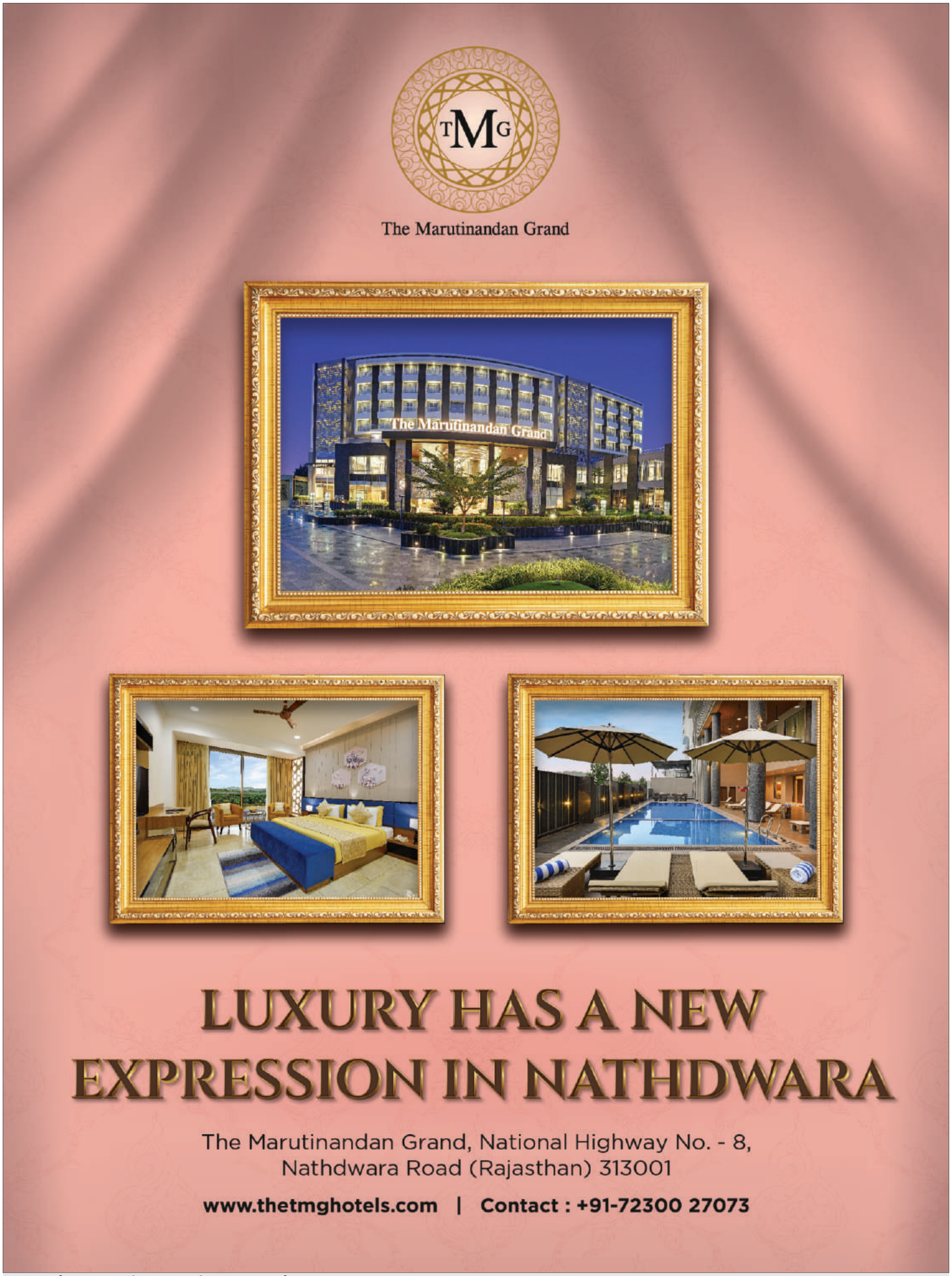
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

# औपचारिक शिक्षा के समानान्तर भी बहुत कुछ है सीखने को

वैदिक युग से लेकर आज तक की शिक्षा व्यवस्था के संबंध में यदि कुछ शब्दों में इस यात्रा का सारांश खोजा जाए तो वह होगा, हमारा सीखने समझने वाला केन्द्र, हमारा लाभार्थी विद्यार्थी जिसके भाव धरातल तक वस्तुत: हमें उतरना था, लेकिन संभवत: हम उसे स्पर्श तक नहीं कर पाए। हम सूचना संप्रेषण तक येन केन प्रकारेण पहुंचकर अपने शैक्षिक और सामाजिक कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठे। आज जब नए विश्व, नए परिदृश्य के बीच मनुष्य के अस्तित्व और अहमियत को जानने की प्रश्न मुद्रा में हैं, तो शिक्षा, बोध, कौशल और इन सबके सामाजिक उपयोग से हम ज्ञान के इतने बड़े नेटवर्क को न जोड़ पाने के दंश से पीड़ित पा रहे हैं स्वयं को। कोशिश कर रहे हैं, लेकिन परिणाम पर कहां तक पहुंचे, विचारणीय है।

समानान्तर प्रयासों की दिशा में शिक्षा का अपेक्षित स्वरूप क्या हो, यह सोचे और गुने बगैर प्रयास और परिणाम के समन्वय का सोच बनना मुश्किल है। हमारी समस्या यह है कि नैतिक शिक्षा के राग अलापते रहने के बावजूद अब तक हम शिक्षण का कोई स्थायी मॉड्यूल नहीं दे पाए। परीक्षा में भाव, संवेदन और मानवीय मूल्यों के समाधान मूलक उत्तर आज भी विद्यार्थी दे रहा है, लेकिन 'हमें चाहिए' से आगे जाकर 'हमने पा लिया' की निष्पत्ति कर भावात्मक शिक्षा के असली स्वाद को विद्यार्थियों तक हम कितना पहुंचा पाए, इस दिशा में प्रयास आज भी अपेक्षित हैं।

शिक्षा से जुड़े विद्वत्जन की समस्या यह भी है कि वे विद्यार्थियों को अवदान के रूप में वह जीवनशैली नहीं दे पाए, जो किसी भी औपचारिक, अनौपचारिक ज्ञान तंत्र का अभीष्ट होना चाहिए। सुविधाकारी आर्थिक तंत्र की मजबूती या सुरक्षित भविष्य के लिए एक अदद नौकरी, व्यवसाय से अर्जित जीवन हमारी अपनी उपज नहीं है। वह तो 'दिया हुआ' है, 'स्वानुभव और विवेक से अर्जित' कहां है? इसीलिए ज्ञान प्राप्ति के बाद हमें मौलिक और मूल्याधारित जीवन जीने की कला नहीं आ पाई। यह वह अभाव है, जिसकी परिपूर्ति के लिए बहुत कुछ किया जाना अब भी शेष है।

अपेक्षा यह भी की थी। हमने कि शिक्षा पाने के बाद हमारा विद्यार्थी 'सृजनधर्मी' बनेगा। वह समाज के लिए एक वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक सोच सम्पन्न जीवन को गढ़ने का कौशल अर्जित कर पाएगा। सृजन वस्तु का नहीं, उर्वर मस्तिष्क का, सरल सर्वतोन्मुखी संवेदनशीलता का जो समस्त उन समस्याओं के समाधान की राह खोज सके, जो वैश्विक से लेकर स्थानीय स्तर तक गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा और वैचारिक हिंसा के रूप में आज मुंह

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

बाए हमारे समक्ष खड़ी है। सर्वतोन्मुख संवेदनशीलता का रास्ता ही संतुलित व्यक्तित्व निर्माण की ओर हमें ले जाता है। इस अपेक्षित से आज भी हम बहुत दूर हैं।

व्यावहारिकता सैद्धांतिक होने का प्रतिलोम नहीं है, वह एक दूसरे पर अंतर्निर्भरता की अपेक्षा रखता है। काश इस समन्वित प्रयोजन से हम आज की शिक्षा को जोड़ चुके होते। हमारी ज्ञानोपरांत तमाम असफलताओं के मूल में इस अंतर्निर्भरता के अभाव का दंश आज भी हमें जीने नहीं देता।

हमारा तमाम पाठ्यक्रम, शिक्षण और मूल्यांकन विधान जिस बड़ी कमी से गुजरने को अभिशप्त है, वह है प्रारंभिक से लेकर युवावस्था पर्यंत तक की शिक्षा प्रणालिकाओं में वय और संप्राप्ति के धरातल पर मनोविज्ञान की समझ से परे जाकर वह सब विद्यार्थी के दिमाग में भर देना, जिसे झेलने की सामर्थ्य नहीं है, उसमें ।परिणाम सब कुछ पढ़कर भी वह खाली का खाली रह जाता है। क्या हम विद्यार्थी के साथ ज्ञान, सूचना और समझ देने के प्रसंग में मानवीय न्याय कर पा रहे हैं ?

शिक्षा की सफलता के दो मुख्य आधार हैं, उसका प्रकृति और संस्कृति उन्मुख होना। इन दोनों ही क्षेत्रों में अकूत खजाना भरा पड़ा है, सीखने और सिखाने का। इनसे जुड़कर और सीखकर ही हम ईश्वरीय कृति के रूप में अपनी महत्ता स्थापित कर सकेंगे।

प्रयोजन, आयोजन और प्रोत्साहन ये वे तीन तत्व हैं, जिन्हें

विद्यार्थियों के सीखने की प्रकृति को तेज बनाने के लिए उपयोग लाने पर पारंपरिक शिक्षण के समानांतर हम सीखने सिखाने के नए उत्स ईजाद कर पाएंगे। भावात्मक विकास, जीवन शैली, संतुलित व्यक्तित्व निर्माण, व्यावहारिक व प्रयोजन मूलक शिक्षण, सृजनात्मकता, मनोवैज्ञानिक, प्रोच, प्रकृति और संस्कृति से जुड़ाव और वैज्ञानिक सोच इन समस्त क्षेत्रों में समानांतर प्रयास करके ही शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन, परिवर्द्धन और संशोधन लाया जा सकता है।

किसी भी रचनाशील समाज के निरंतर विकास में सहयोगी शिक्षा के स्वरूप पर चिंतन किया जाना प्रासंगिक होगा, ऐसा विश्वास है। इति!

प्रस्तोता :

**डॉ. राकेश तैलंग**
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
वरिष्ठ साहित्यकार, राजसमंद

प्रिंटिंग के क्षेत्र में वर्षों पुराना जाना-पहचाना विश्वसनीय नाम
अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित
सभी प्रकार की ऑफसेट प्रिंटिंग, मल्टीकलर शादी कार्ड, विजिटिंग कार्ड सभी प्रकार की प्रिंटिंग, रबर की मोहरें कम्प्यूटर जॉब, डिजाइनिंग, लेमिनेशन, स्पॉइल बाइंडिंग के लिए
ऑफसेट यूनिट
रमेश आचार्य 9414171545
आचार्य प्रिन्टर्स
जे-11 हस्तिनापुर, कांकरोली जिला राजसमन्द फोन नं. 02952-231545
आचार्य पब्लिसिटी
राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, माटी या मेवाड़ री, जस्ट राजसमंद के अलावा समस्त राज्य व राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन देने की सुविधा उपलब्ध।
रमेश आचार्य 9414171545
आचार्य ई-मित्र
स्केन, मूल निवास, जाति, आय, जन्म, बिजली बिल, पेन कार्ड, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, सभी प्रकार के ऑनलाइन फॉर्म व टोकन काटने की सुविधा उपलब्ध।
आत्मदीप आचार्य - 7014307942, 9461956731

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 96729-80901

# एड्स बेमारी है भारी, वंचवा री करलो त्यारी

एड्स बेमारी ऊ सब जणा वाकफ है। कस्यो बी देस वो वठे एड्स रा मांदा मली जावेला। कठेई कम कठेई वत्ता। या मांदगी तो सब मांदगियां पे भारी है। अणी रो किटाणु सरीर री पाळ नेईस पोली करी नाके जठा केड़े कोई बी दूजी बेमारी वे तो कतरी बी दवा दारू करो, पाछी नी फरे। मांदा रे मर्‌या लारे ई रोग रो खातमों वे। या पाळ कणी ने दीखे नी है पण, वे सबां में। या बेमारी बी परदेस ऊं आई है। आपणा देस में अणी ने तीस बरस ऊपरे वेई ग्या है। जो मनख गाड़ी गडार चालता चालता गेलो परो भूले तो या बेमारी त्यार हमझो।


शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648


परदेसां में गाड़ी गडार जस्यो काईस नी है। सबां रा न्यारा- न्यारा गेला। कोई कणी गेले तो कोई कणी गेले। गरीब देसां रा अणभणियां न अणहमझ्या मोट्यार लपेटा में झट आई जावे। बेमारी जतरी खतरनाक है, अणी ऊं वंचवा रो गेलो वतरोई हूदो न होरो है।

एक बात री गांठ बांधी लो के को गेले नी जाणो। गेले जावो न गेले आवो तो नख में बी रोग नी वेला। आपाणे देस री रीत भांत देसां ठावी है। जो मनख अणी रे परवाणे चाले वणारो मनख जमारो हुदरी जावे। अबे तो परदेसां रा मनख बी आपणी रीत भांत री कदर करवा लागा है। अणी बेमारी में किटाणु सरीर में वळया केड़े बी आठ दस वरस तक बेमारी रा कोई हेलयाण नी लादे। आखी पाळ टूटवा में दस वरस लागे। अतरा टेम में तो मनख केई काम डगाई सके। काम धंधो करीन पिया कमाई सके, टाबरां ने भणाई न लेण पे लगाई सके। समाज रा केई काम करी सके।

गिलती सबांऊं वे पण गिलती करीन जो हमळी जावे वणीने मनख केवे। मनख जमारो लेईन मनखां जस्या काम नी कीदा तो गियो जमारो हेल में। यो लोक न परलोक सब पाणी में। या बेमारी एक दूजा में हट फेले। भगवान मनख ने लगाई रो जोड़ो वणायो पण केई जणा नवा जोड़ा वणावता जावे। जुना ने भूलता जावे। नराई टरक डरेवर मीना मीना हुदी घर बारणे रेवे। वे अवस करीन अणी बेमारी रा सिकार वणे। पिया हाटे डील वेचवा वाली लगायां तो बेमारी री दुकानां है जठे रिप्या रा रिप्या लागे न बेमारी मले मोफत में।

हो वातां री एक वात या के मन ने काठो राखो। फेर बी मन भटके तो उपाव लारे राखो।


**डॉ. गोपाल राजगोपाल**
वरिष्ठ चिकित्साधिकारी
आरएनटी मेडिकल कॉलेज
उदयपुर, 90012-95523

जयवर्द्धन NEWS
राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए
YouTube Channel Jaivardhan News

गणतंत्र दिवस
की समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
समस्त वार्डपंच
एवं ग्रामवासी
प्रवीण मेवाड़ा-सरपंच
स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) : चलो चलें एक काम करे-गंदगीमुक्त हर गांव करें।
बीमारी फैलाये कचरा और गंदा पानी, प्रबंधन से सुखी होगी हमारी जिन्दगानी
लंपी लंपट आयग्यो, बण नै जम रो दूत हळद गिलोय अजवायण, बपराओ गौपूत
● लंपी वायरस से गायों को बचाने के लिए बाड़ों की सफाई रखें।● किसी भी पशु में लंपी के लक्षण दिखने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें।
अपील
◆ मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से वंचित परिवारों का पंजीयन करवाएं
◆ पानी की बूंद-बूंद को बचाएं।
◆ अधिकाधिक पौधारोपण कर उनके रख-रखाव व सुरक्षा करें।
◆ अपने गांव मोहल्ले व घरों के सामने स्वच्छता बनाएं रखें।
◆ जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य करावें।
◆ बाल विवाह सामाजिक अपराध है, इसे रोके।
◆ पानी की प्रत्येक बुन्द कीमती है, इसका दुरूपयोग ना करें।
◆ महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनान्तर्गत जॉब कार्ड बनवाकर 100 दिन का रोजगार हक से पाएं।
◆ जन आधार कार्ड बनवाएं।
ग्राम पंचायत लावासरदारगढ़
पंचायत समिति आमेट, जिला-राजसमंद

गणतंत्र दिवस पर सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं मंगल शुभकामनाएं

लक्ष्मणसिंह राठौड़
वरिष्ठ उप संपादक
जयवर्द्धन न्यूज

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद
के साथ देश- प्रदेश
की अपडेट खबरों
के लिए
विजिट करें
www.jaivardhannews.com

YouTube Channel
Jaivardhan News

Contract Number
7976220600, 9672980901



जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद 7976220600, 9672980901

To

YouTube jaivardhannews | jaivardhannews.com | liverajsamand | जयवर्द्धन